chapter-6

अध्याय-६

'रघुवंश दीपक' में चरित्र सृष्टि

अध्याय -६

रघुवंश दीपक में चरित्र चित्रण

कथात्मक साहित्य में चरित्र चित्रण का अन्यतम् महत्व है। वस्तुत: चरित्र सृष्टि ही एक और कवि के निजी जीवन दर्शन, उसकी जीवन और जगत से प्राप्त व्यापक अनुभवों को रसमयी पद्धति पर प्रस्तुत करने वाली अभिव्यंजना शक्ति तथा अनेक विधि जीवन- चित्रों को ग्रहण करने वाली समर्थ प्रतिभा का द्योतन करती है तो दूसरी और वह उसकी कल्पना शक्ति को प्रबुद्ध करके एक निश्चित दिशा में नियोजित भी करती है। अत: चरित्र सृष्टि द्वारा कवि अपनी जीवन विषयक अभिव्यक्ति को ग्राह्य एवं प्रभावशाली बना सकता है। इसके माध्यम से कथावस्तु में सप्राणता लाकर उसे अधिक मार्मिक बनाया जा सकता है। उपर्युक्त वस्तुस्थिति के प्रकाश में हम यह कह सकते हैं कि इसके माध्यम से हम कवि विशेष के चिन्तन, मनन तथा अनुभूतियों एवं समस्त कार्य व्यापारों का आकलन करते हुये उसके काव्य सर्जन के मर्म को दृष्टिगत करने के कारण उसके कृतित्व का यथेष्ट मूल्यांकन भी कर सकते हैं। पूर्ववर्ती अध्ययन के अन्तर्गत `रघुवंश दीपक` की प्रबन्धात्मकता एवं महाकाव्यत्व पर विचार करते समय हम उसमें महच्चरित्र की प्रतिष्ठा का संक्षेप में निर्देश कर चुके हैं जो कि एक प्रकार से उसके उद्देश्यगत अवयव से सम्बद्ध कहा जायेगा। किन्तु जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट किया जा चुका है कि कथा काव्य को रसमयता के साथ प्रस्तुत करने तथा उसे मार्मिक भाव व्यंजना से सम्पृक्त करके अभिव्यक्ति को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये चरित्र चित्रण भी बहुत कुछ सहायक सिद्ध होता है। वस्तुत: कथा काव्य के अन्तर्गत कवि पात्रों के माध्यम से अपने निजी व्यक्तित्व अथवा जीवन चेतना को अप्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत करता है। उच्चकोटि का प्रतिभा सम्पन्न समर्थ कवि चरित्र, चित्रण के माध्यम से प्राय: पात्रों के अन्तर्जीवन का भी विश्लेषण करता है। मनोविज्ञान से भी यह बात समर्थित होती है कि मनुष्य के बाहरी कार्यकलाप उसके अन्तर्जगत का ही परिणाम या प्रतिच्छाया है। अत: विद्वानों ने उपरिनिर्दिष्ट उद्देश्यों के अतिरिक्त चरित्र

सृष्टि के दो गम्भीरतर उद्देश्य स्वीकार किये हैं । १ मानव हृदय के रहस्यपूर्ण क्रिया कलापों का उद्घाटन तथा इसके द्वारा उसके व्यक्त स्वरूप का अनुशीलन विश्लेषण ।

उपर्युक्त विशेषता के कारण साहित्य का पाठक, श्रोता या प्रेक्षक लेखक द्वारा प्रस्तुत पात्रों से भावना भूमि पर तटस्थता से मिल सकता है पर जैसा कि डा० खण्डेलवाल जी का मत है कि प्रभावशाली रूप में अंकित पात्र या उसके जीवन को सहृदयजन प्राय: अपने अपने संस्कारों व भावना -शक्ति के अनुपात में ही एक गम्भीरतर रूप में ग्रहण करने को तत्पर रहते हैं। २ पात्र सृष्टि की अभिव्यक्ति गत महत्ता पर ऊपर विचार किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त पात्र-सृष्टि की मूल प्रेरणा भी उस महत्व को दूसरे रूप में प्रकाश में लाती है । डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल के अनुसार "अपने आदर्शों भावोर्मियों आदि को तुरन्त किसी पात्र या पात्रों के माध्यम से चरितार्थ करके शुद्ध अभिव्यक्ति का सुख प्राप्त करना तथा जीवन की संचित अनुभूति राशि या विचार राशि में अपना भी योगदान करना पात्र सृष्टि की मूल प्रेरणा है।" ३ कवि अपने मानस-पटल पर जिन चित्रों को संवारता है वे उसकी रचना में पात्र बन कर वाह्य जगत में उसका प्रतिनिधित्व करते हैं। उसकी अदृश्य मानसी सृष्टि दृश्य जगत में पात्रों के माध्यम से रूपायित होती है तथा उसका व्यष्टि उनके रूप में समष्टि में परिवर्तित हो जाती है। अत: काव्य में चरित्र चित्रण का महत्व निस्संदिग्ध रूप में स्वीकार करना पड़ता है। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि पात्र ही वह माध्यम है जो कवि की चेतना को पाठक तक पहुंचाने का कार्य एक प्रकार से सम्प्रेषण यंत्र की भांति करता है। तीसरे काव्य में रस की सृष्टि भी पात्रों के माध्यम से ही सम्यक् रूप से हो सकती है ।

इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि पात्रों के क्रिया कलापों से ही

१- डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल- जयशंकर प्रसाद- वस्तु और कला पृष्ठ १३३
२- वही पृष्ठ - वही
३- डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल- जयशंकरप्रसाद वस्तुऔर कला पृष्ठ-१३३

कथानक और कथावस्तु का निर्माण होता है। अत: इसमें सन्देह नहीं कि रघुवंश दीपक के सम्यक् मूल्यांकन में उसके कवि द्वारा प्रस्तुत चरित्र चित्रण का अनुशीलन अनुपेक्षणीय है जिसके लिये सर्व प्रथम चरित्र चित्रण के आधार को दृष्टिगत कर लेना आवश्यक होगा।

चरित्र विधान का आधार तथा रूप

चरित्र विधान का स्वरूप कलाकृति के रूप, लेखक की रुचि तथा योग्यता तथा उसकी कृति के उद्देश्य पर निर्भर करता है। १ इस वस्तुगत आधार के अतिरिक्त काव्य, नाटक, उपन्यास तथा कहानी आदि साहित्य रूपों में चरित्र चित्रण तीन प्रकार से होता है -

१- पात्रों के कार्यों द्वारा

२- उनकी बातचीत द्वारा तथा

३- लेखक के कथन तथा व्याख्या द्वारा

दूसरे शब्दों में इन्हें चरित्र चित्रण की आधार भूत प्रणालियां कहा जा सकता है। कुछ अध्येता उपर्युक्त तीन माध्यमों को दो प्रणालियों में वर्गीकृत करना अधिक उपयुक्त मानते हैं । २ प्रथम प्रत्यक्ष या विवरणात्मक प्रणाली तथा दूसरे परोक्ष या विश्लेषणात्मक प्रणाली । प्रथम के अन्तर्गत लेखक का प्रत्यक्ष कथन और व्याख्या आयेगी और द्वितीय के अन्तर्गत प्रथम दोनो प्रकार आ जायेंगे। प्रत्यक्ष प्रणाली में कवि स्वयं प्रवक्ता या व्याख्याता बनकर चारित्रिक विवरण प्रस्तुत करता है, अत: उसमें अभिव्यंजना की सरसता को कम ही अवसर मिलता है। यही कारण है कि श्रेष्ठ काव्यों में इसका प्रयोग प्राय: नहीं होता। द्वितीय प्रणाली द्वारा पात्रों के चरित्र का उद्घाटन तथा विश्लेषण विभिन्न परिस्थितियों एवं कार्य व्यापारों के माध्यम से

१- दृष्टव्य- हिन्दी साहित्य कोश भाग १ पृष्ठ ४८८ शीर्षक पात्र।

२- दृष्टव्य- डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल- जयशंकर प्रसाद - वस्तु और कला पृष्ठ- १५० ।

होता है। अत: इसे सरस एवं स्वाभाविक - प्रणाली कहा जा सकता है। `रघुवंश दीपक` के सन्दर्भ में संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि उसमें दोनों प्रणालियों का अनुगमन किया गया है।

चरित्र चित्रण में कथावस्तु से सबंधित एक अन्य सम्भाव्य आधार पर विचार कर लेना प्रासंगिक होगा और वह कवि की रुचि, योग्यता तथा उद्देश्य से प्रेरित कथावस्तु के संयोजन से सबंधित है। पूर्ववर्ती अध्याय से `रघुवंश दीपक` की कथावस्तु का विवेचन करते समय हम यह निर्दिष्ट कर चुके हैं कि कथा काव्य की कथावस्तु तीन प्रकार की होती है। १-उत्पाद्य या कल्पना प्रसूत २- अनुत्पाद्य या ख्यातवृत ३- मिश्र/कथावस्तु के इस वैशिष्ट्य का प्रभाव चरित्र विधान पर पड़ता है। यदि कथावस्तु पूर्णतया अनुत्पाद्य तो उसके पात्र भी प्राय: ऐतिहासिक ही होंगे, जहाँ स्वतंत्र रूप से किसी कल्पना प्रसूत चरित्र-विधान को अवकाश भी न होगा। महाकाव्य प्राय: ख्यात वृतों पर आधारित होते हैं किन्तु समर्थ कवि अपनी निजी रुचि, प्रतिभा और उद्देश्य के आधार पर कथावस्तु में मौलिक प्रसंगोद्भावना करके तदनुरूप घटना प्रसंगो और कार्य व्यापारो को अपनी कल्पना शक्ति से प्रस्तुत करता है। और इसके कारण कथावस्तु को मिश्रित कहा जाता है। अत: इस स्थिति में किसी प्रबन्ध काव्य का चरित्र,विधान भी दो रूपों में हो सकता है - (१) काल्पनिक तथा (२) ऐतिहासिक या यथार्थ, समर्थ कवि अनेक बार ख्यातिवृत्त से प्राप्त कथा वस्तु तथा उसके पात्रों को अपनी निजी जीवन दृष्टि तथा कल्पना शक्ति द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि परम्परा से प्राप्त चरित्र हमारे सुपरिचित होकर भी एक नयी आभा से मण्डित होकर उपस्थित होते हैं। उदाहरणार्थ श्रवण की कथा में दशरथ और गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रामचरित मानस मेंप्रस्तुत पार्वती तथा राम और लक्ष्मण के चरित्र विधान। `रघुवंश दीपक` के पात्र भी प्राय: ऐतिहासिक ही है किन्तु कहीं कहीं विविध घटना- प्रसंगो तथा कार्य व्यापारों के योग से उनके निरूपण में नवीनता और उत्कृष्टता भी दृष्टि गोचर होती है जिस पर प्रसंगानुसार आगे विचार किया जाएगा।

इसी प्रकार उद्देश्य और जीवन गत अभिरुचि की दृष्टि से चरित्र चित्रण के दो रूप प्रकाश में आते हैं - आदर्शवादी और यथार्थवादी और इनके आधार पर पात्रों के भी दो वर्ग हो जाते हैं। पूर्ववर्ती अध्यायों के विवेचन से प्रकट है कि राम काव्यों की कथावस्तु परम्परागत रूप से आदर्शवाद की ओर उन्मुख रही है। जीवन की सत् और असत् वृत्तियों का जो व्यापक संघर्ष उनमें आदि से अन्त तक दिखलाकर सद्वृत्तियों की विजय को प्रस्तुत किया गया है इसके कारण उक्त द्विविध पात्र सृष्टि का होना अवश्यम्भावी है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि 'रघुवंश दीपक' का चरित्र विधान इसका अपवाद नहीं है।

पात्र-सृष्टि के उपर्युक्त आधारों के अतिरिक्त मुख्य कथा की व्यापक और आंशिक सम्बद्धता के आधार पर या महाकाव्य के अन्तर्गत उनकी प्रधानता की वस्तुस्थिति के आधार पर भी दो प्रकार के पात्र होते हैं, मुख्य पात्र और गौण पात्र। इसी प्रकार मानव प्रकृति के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने पात्रों को दो वर्गों में विभाजित किया है - सामान्य पात्र तथा दूसरे विशिष्ट पात्र। १ काव्य में विशिष्ट पात्रों की योजना कवि या तो किसी विशिष्ट आदर्श की स्थापना या रक्षा के लिये करता है या ~~फिर~~ फिर किसी विशिष्ट मानवीय प्रकृति के प्रतीक के रूप में करता है। किन्तु सामान्य पात्रों की योजना का आधार निश्चित ही काव्य में सामान्य मानवीय प्रकृति के निरूपणार्थ ही होता है। 'रघुवंश दीपक' के श्रीराम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान तथा रावण आदि विशिष्ट पात्रों की श्रेणी में आते हैं और इनकी चारित्रिक विशेषता के कारण सम्पूर्ण कथा के अन्तर्गत आद्यन्त इनका प्रभाव बना रहता है। सामान्य पात्रों के चरित्रों के लिये यह आवश्यक नहीं है कि वे आदि से अन्त तक विद्यमान रहें। कभी कभी तो वे बीच में आने वाले एक आध घटना प्रसंगों तक ही अपनी चारित्रिक झलक दिखा ~~तक~~ जाते हैं तो कभी आदि से अन्त तक सम्बद्ध होकर भी उनके कार्य कलाप या उपस्थिति मात्र ही बीच बीच में ~~अत~~ अत्यल्प काल के लिये दृष्टिगत

१- आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल - गोस्वामी तुलसीदास सप्तम् संस्करण पृष्ठ १२६ शील निरूपण और चरित्र चित्रण।

होती है। सामान्य चरित्र के पात्रों को हम दो विभागों में रख सकते हैं -

१- मुख्य कथा से संबंधित

२- प्रासंगिक कथा से संबंधित

१- मुख्य कथा से सम्बन्धित सामान्य पात्र

कतिपय पात्र यद्यपि मुख्य कथा से संबंधित होते हैं किन्तु विशिष्ट पात्रों की भाँति उनका चरित्र उतना महत्त्वपूर्ण नहीं होता। इसके अतिरिक्त वे कुछ समय के लिये यथावसर प्रकट होते और अपनी झलक दिखाकर चले जाते हैं। कवि की निजी रुचि, चेतना अथवा पात्रों से सम्बद्ध वस्तुगत विशेषता के कारण ऐसे पात्र अपने व्यक्तित्व की प्रभावशाली छाप भी पाठक या श्रोता पर डाल सकते हैं। 'रघुवंश दीपक' में आने वाले इस कोटि के पात्रों की सूची निम्नांकित है

२- प्रासंगिक कथा से संबंधित सामान्य पात्र

प्रबन्ध काव्य में मुख्य कथा के साथ प्रासंगिक कथाओं का संयोजन होने के कारण अनेक ऐसे पात्र होते हैं जो कि केवल प्रासंगिक कथाओं तक ही सीमित होते हैं। इनका महत्त्व भी प्रासंगिक कथाओं की भाँति गौण ही होता है और किसी न किसी रूप में विशिष्ट पात्रों के चरित्र से सम्बद्ध होता है। कभी कभी ऐसे पात्र भी अत्यल्प काल के लिए क्यों न सही, काव्य में मार्मिकता एवं रस की सृष्टि करने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होते हैं। रामचरित मानस के बालि, जटायु, शबरी जैसे पात्र उक्त विशेषता का द्योतन करते हैं। रघुवंश दीपक में आने वाले प्रासंगिक कथाओं से सम्बद्ध सामान्य पात्र इसप्रकार हैं -

बालि, जटायु, मारीचि, सुबाहु, ताड़का, खरदूषण, त्रिशिरा, कवन्ध, विराध, कालनेमि, त्रिजटा, लवणासुर, श्रवण, शबरी, विश्वावसु, गंधर्व अहिल्या, अत्रि आदि मुनिगण, अनुसूया आदि। उपर्युक्त सूचियों से प्रकट है कि 'रघुवंश दीपक' के सामान्य कोटि में आने वाले अनेक पात्र ऐसे हैं, जिनकी सामग्री इतर स्त्रोतों से ली गई है और इसी कारण उसके पात्रों की संख्या भी रामचरित मानस से बढ़ गई है।

प्रबन्ध काव्य में चरित्र-विधान का निरूपण करते हुये आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि यह चार रूपों में हो सकता है। १

१- आदर्श रूप में २- जाति स्वभाव रूप में

३- व्यक्ति स्वभाव रूप में ४- सामान्य स्वभाव रूप में

इनमें से अन्तिम प्रकार को आचार्य शुक्ल जी ने चरित्र चित्रण के अन्तर्गत न मान कर सामान्य प्रकृति वर्णन के अन्तर्गत माना है। २ शैष की दृष्टि से विचार किया जाये तो रघुवंश दीपक में सर्वांग पूर्ण आदर्श की प्रतिष्ठा का प्रयास कवि सहजराम जी ने राम और सीता के चरित्रों में किया है। अन्य सभी पात्र या तो वर्ग या समुदाय विशेष अथवा जाति स्वभाव के प्रतीक बनकर आये हैं या व्यक्तिगत स्वभाव की विशेषताओं को प्रभावित करते हैं। अत: संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'रघुवंश दीपक' में महाकाव्योचित चरित्र -विधान की व्यापकता विद्यमान है। पूर्ववर्ती विवेचन के अन्तर्गत हमने चरित्र विधान के जिन सैद्धान्तिक पक्षों तथा रघुवंश दीपक में प्राप्त उसके रूपों का जो अनुशीलन प्रस्तुत किया है उसके आधार पर इस कृति की निम्नलिखित विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है -

१- 'रघुवंश दीपक' के पात्र प्राय: प्रख्यात हैं और साहित्यिक परम्परा से प्राप्त होते हैं।

२- इस कृति में पात्रों की अनेकरूपता तथा बहुलता है अत: इसमें महाकाव्योचित चरित्र विधान की व्यापकता परिलक्षित होती है।

३- रघुवंश दीपक का चरित्र चित्रण अधिकांशत: घटना प्रसंगों के माध्यम से परोक्ष या व्यंजनात्मक प्रणाली का है। कहीं कहीं पर कवि द्वारा प्रत्यक्ष पद्धति का विवरणात्मक रूप भी मिलता है किन्तु ऐसे विवरण संक्षिप्त ही है। अत: एक प्रकार से वह कृति को सम्भाव्य दोष से सुरक्षित रख पाया है।

४- 'रघुवंश दीपक' में सशक्त प्रतिपक्ष का विधान भी है जिससे आदर्श पात्रों के चरित्र का उद्घाटन अधिक प्रखर हो सका है।

५- कवि सहजराम ने इस काव्य में प्राय: चरित्र विधान की सभी प्रणालियों का अनुसरण किया है।

चरित्र विधान के विविध सैद्धान्तिक पक्षों के आधार पर प्रधान पात्रों का चरित्र चित्रण हमारे परवर्ती विवेचन का विषय है और यह कवि के कृतित्व के सम्यक् मूल्यांकन के लिये आवश्यक है। किन्तु इससे पूर्व दो विषयों की संक्षिप्त चर्चा हमें प्रासंगिक और आवश्यक प्रतीत होती है। एक तो रघुवंश दीपक का नायक तथा दूसरे उसका प्रतिपक्ष विधान।

१- रघुवंश दीपक का नायक

यद्यपि रघुवंश दीपक में राम के अतिरिक्त अन्य दो राजाओं के चरित्र वर्णित किये गये हैं किन्तु महाकाव्य के धीरोदात्त नायक श्री राम ही है जिनके महच्चरित को उद्घाटित कर कवि ने एक सर्वांग पूर्ण आदर्श की प्रतिष्ठा का प्रयास किया है। ग्रन्थ में श्री राम का चरित्र अन्य सभी पात्रों से महान, प्रेरक तथा उदात्त होने के कारण सब पर अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ है। इसकेअतिरिक्त आधिकारिक कथा उनके ही चरित्र से संबंधित तथा प्रेरित है। राम के चरित्र का ही समग्र चित्रण आदि से लेकर अन्त तक ग्रन्थ का वर्ण्य विषय बना रहा है। वे ही फलभोक्ता के रूप में उपक्रम से लेकर उपसंहार तक सम्पूर्ण ग्रन्थ में चित्रित किये गये हैं। रघुवंश दीपक में राम का चरित्र ही वह धुरी है जिसके चारो ओर अन्य सभी पात्र परिक्रमा से करते दिखाई देते हैं। महत्वपूर्ण होते हुये भी अन्य चरित्र उसके आश्रित दिखाई देते हैं। अतः राम ही 'रघुवंश दीपक' के नायक हैं।

२- रघुवंश दीपक में प्रतिपक्ष का विधान

प्रबन्ध काव्य में आधिकारिक कथा के नायक अथवा अन्य सहयोगी पात्रों के चरित्र को निखारने, प्रभावशाली बनाने तथा विशेषतः नायक और अन्य पात्रों के चरित्रों के सम्यक,उद्घाटन के लिये प्रतिपक्ष का विधान किया जाता है। कभी कभी कवि समकालीन दुष्प्रवृत्तियों तथा समाज विरोधी, संस्कृति के विनाशक तत्वो के प्रतीक रूप में सशक्त प्रतिपक्ष के पात्रो की रचना करता तथा उसका विधान करके वह युगीन संघर्ष को भी रूपायित करता है।

प्रतिपक्ष का नायक ही काव्य के नायक का प्रतिद्वन्द्वी तथा मुख्य संघर्ष का नियामक एवम् संचालक होता है। 'रघुवंश दीपक' में सहजराम जी ने युगीन सन्दर्भों की पृष्ठभूमि पर एक सशक्त प्रतिपक्ष का विधान किया था जिसका मुख्य संचालक तथा नियामक जगद्विजयी रावण था जिसके चरित्र में समाज विरोधी विचारधारा तथा संस्कृति की विनाशक सभी चेष्टाओं एवं अमन्यता तथा आसुरी प्रवृत्ति के मूर्तरूप में चित्रित किया गया है। इसमें सन्देह नहीं कि इन प्रयासों में वह प्रायः गोस्वामी तुलसीदास की ही एतद्विषायक चेतना का अनुगामी कहा जा सकता है।

रघुवंश दीपक के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण

काव्य में चरित्र चित्रण संबंधी अवधारणाओं तथा विभिन्न विद्वानों की एतद्विषयक मान्यताओं के प्रकाश में हमने रघुवंश दीपक के चरित्र विधान की तात्त्विक विवेचना का प्रयास पूर्ववर्ती पृष्ठों में किया है। यहां उसके प्रमुख पात्रों के चरित्र चित्रण को विवेचित कर उनके माध्यम से अभिव्यक्त होने वाली कवि सहजराम जी की निजी प्रकृति तथा जीवनादर्शों को लक्ष्य करने का प्रयास करेंगे। कोई भी कवि, लेखक अथवा रचनाकार अपनी रचना में पात्रों के परिवेश में ही जीता है क्योंकि पात्र रचयिता की कल्पना से रूपाकृत होकर प्राय: जान या अनजान में उसके जीवनादर्शों की सिद्धि के लिये ही नियोजित होते हैं। १ प्रस्तुत प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में 'रघुवंश-दीपक' की रचना के उद्देश्य पर विचार करते समय हमने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि 'रघुवंश दीपक' की रचना ~~एक महान्~~ आध्यात्मिक उद्देश्य से प्रेरित होकर की गई थी। श्रीराम के चरित्र गान तथा उनकी भक्ति के प्रचार एवं प्रसार के लिये ही सहजराम जी ने अपने प्रेरक महाकवि तुलसीदास जी को अपना पथ प्रदर्शक मानकर 'रघुवंश दीपक' जैसे विस्तृत महाकाव्य की रचना की थी जिसमें उन्हें अपनी निजी साधना तथा भक्ति पद्धति को प्रस्तुत करने का विपुल अवकाश सरलता से प्राप्त हो सका। श्रीराम को ही अपना परमाराध्य मानकर उनके लोक पावन चरित्र को अपना वर्ण्य विषय बनाकर उनके ही दिव्य गुणों के गान करने में उन्होंने अपनी वाणी की सार्थकता मानी थी। अत: उनके राम ब्रह्म के साक्षात् विग्रह ही नहीं अपितु स्वयं परात्पर ब्रह्म ही थे। अपनी इस वैयक्तिक साधना तथा भक्ति पद्धति को ~~[illegible]~~ अत्यन्त प्रभावी तथा सर्व सुलभ बनाने के लिये ही उन्होंने अपने महाकाव्य

१- डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल- जयशंकरप्रसाद वस्तु और कला पृष्ठ-१३४

के नायक श्रीराम को दो रूपों में चित्रित किया है। एक नारायण रूप में तथा द्वितीय नर रूप में । 'रघुवंश दीपक' के प्रमुख पात्रों के चरित्रचित्रण में हम सर्वप्रथम महाकाव्य के नायक श्रीराम के उन्हीं दो रूपों की झांकी प्रस्तुत करेंगे ।

१- श्रीराम

'रघुवंश दीपक' के नायक श्रीराम हैं जिनके चरित्र के माध्यम से ही कवि ने सर्वांगपूर्ण आदर्श की प्रतिष्ठा का प्रयास किया है। वे एक आदर्श सात्विक पात्र के रूप में महाकाव्य के उपक्रम से लेकर उपसंहार तक अपनी चरित्रगत विशेषता के कारण अन्य सभी पात्रों को प्रभावित तथा नियंत्रित करते हुए सबकी प्रेरणा के केन्द्र बिन्दु बने हुये चित्रित किये गये हैं। वैयक्तिक तथा जातीय (मानव जाति) आदर्श के रूप में चित्रित करने के उद्देश्य से कवि ने विभिन्न परिस्थितियों, घटनाओं तथा प्रसंगों की सृष्टि करके उनके चरित्र को अत्यन्त स्वाभाविक तथा मानवीय तर्कनाओं को परितुष्ट करने वाला बना दिया है। नारायण रूप में अति मानवीयता का चित्रण करके भी सहजराम जी ने उनकी नर लीलाओं को मानवीय संवेदनाओं से सम्पृक्त कर जो समन्वित रूप खड़ा किया है उसे हम देखने का प्रयास करेंगे ।'रघुवंश दीपक' में श्रीराम का चरित्र दो रूपों में मिलता है

(१) ब्रह्म अथवा नारायण रूप में

(२) नर रूप में

१- रघुवंश दीपक में श्रीराम का नारायणत्व

सहजराम जी ने रघुवंश दीपक में श्रीराम को साक्षात् परात्पर ब्रह्म, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, काल के भी काल, महदादिक तत्वों के नियंता, अखिल ब्रह्माण्ड नायक, निरामय, निराकार, कैवल्यदाता, सर्वज्ञ ,सर्वात्मा, विश्व-उत्पत्ति , थिति नाश कर्ता, मत्स्यादि अवतार धारण करने वाले परमीश, परमायतन तथा गोतीत कहकर चित्रित किया है। यद्यपि वे विष्णु के अवतार रूप में पृथ्वी पर भू भार हरण करने के लिये अवतीर्ण होते हैं

तथापि विधि, हरि, शम्भु जैसी महान् शक्तियों के भी प्रेरक ह, नियंत्रक तथा स्वामी हैं। श्रीराम निर्गुण होकर भी सगुण रूप में अपने भक्तों को सुख देने उनके कष्ट निवारण तथा रक्षा में निरन्तर तत्पर रहने वाले परम कारुणिक, कृपालु, दीन वत्सल तथा शरणागत पालक हैं। अनन्त शक्ति, अप्रतिम शील तथा अद्वितीय सौन्दर्य से युक्त वे ही परमाराध्य हैं। मणिमाला की प्रत्येक मणि में जिस प्रकार सूत्र व्याप्त है, राम उसी प्रकार सम्पूर्ण सचराचर में रमे हुये हैं १ और सबके हृदय में अनाशक्त भाव से निवास करते हुये वे समस्त विकारों से दूर हैं। २ जन्म से लेकर महा प्रयाण तक 'रघुवंश दीपक' में राम के इसी नारायणत्व से युक्त रूप की ही सर्वत्र प्रधानता दिखाई देती है। छोटी छोटी चमत्कारपूर्ण घटनाओं के संयोजन द्वारा विभिन्न प्रासंगिक कथाओं की सृष्टि कर, अनेक परिस्थितियों से उनको सम्बद्ध कर, अन्य पात्रों के द्वारा विनय, स्तुति तथा प्रतीति के केन्द्र विन्दु के रूप में उन्हें चित्रित किया है। माता, पिता, सासु-श्वसुर मित्र, गुरु, शत्रु, सेवक, बंधु, ग्रामवासी, प्रजा, परिवार, देव, किन्नर राक्षस, ऋषि, मुनि सभी उन्हें ब्रह्म ही जानते हैं। इन्द्रादि देवगण सहित ब्रह्मा तथा शंकर उन्हें ब्रह्म के रूप में ही वंदना तथा स्तुति करते हैं। वेद उनका गुणगान अनादि, अव्यक्त तथा सर्वतया कहकर करते हैं। जन्म ग्रहण करने से पूर्व कौशल्या को जिस स्वरूप का दर्शन हुआ था वह विराट रूप में पूर्ण ब्रह्म ही था। नारायणत्व की प्रतिष्ठा करने में कवि इतना सजग रहा है कि जहाँ राम को प्राकृत नर रूप में लीलारत देखकर भ्रम उत्पन्न होने की संभावना दिखाई दी उसने किसी घटना के माध्यम से या स्वयं ही अवसर निकाल कर उनके परम ब्रह्मत्व की ओर संकेत कर दिया है। वस्तुत: राम के चरित्र उद्घाटन में कवि का यह प्रयास उनकी भक्ति पद्धति तथा ग्रन्थ रचना के उद्देश्य की मूल प्रेरणा की ओर संकेत करती है। राम को परमाराध्य

१-रघुवंश दीपक- किष्किन्धा काण्ड, दोहा ६२ के बाद की चौपाई
२- रघुवंश दीपक- बालकाण्ड, दोहा ३५३ के पूर्व की चौपाई

के रूप में प्रतिष्ठित करना उनका मुख्य लक्ष्य था जिसमे उनमें अतिमानवीयता के गुणों का समावेश करना उनके लिये अनिवार्य था।

२- रघुवंश दीपक में राम का नर रूप में चित्रण

महाकाव्य के नायक के रूप में राम का नर चरित्र भी उतना ही महान् और आदर्श रूप में चित्रित हुआ है जितना नारायणत्व की प्रतिष्ठा में अति मानवीयता का आरोप कर उन्हें प्रस्तुत किया गया है। राम के सम्पूर्ण जीवन में सात्विक वृत्ति का आदर्श सर्वत्र दिखाई देता है। विभिन्न मानवीय विकारों को उभारने वाले जितने अवसर उनसे सम्बद्ध किये गये हैं कवि ने उन सब में उनकी सात्विक वृत्ति की ही प्रधानता प्रदर्शित की है। राम के कर्ममय जीवन का प्रारम्भ विश्वामित्र जी के साथ तपोवन की ओर यज्ञ रक्षार्थ अपने बन्धु लक्ष्मण सहित प्रस्थान करने से होता है। पैदल ही बिना पद त्राण की गई वह यात्रा राम के द्वारा पूर्ण होने वाले महत्कार्य का प्रारम्भ ही था जिसमें राम का शौर्य, अडिग साहस तथा कर्ममय जीवन मुखरित हो उठा है। राक्षसी ताड़का के सम्मुख आते ही विश्वामित्र जी ने उसके वध के लिये श्रीराम को प्रेरित किया किन्तु धर्मशील राम ने तुरन्त कहा-

कहत निगम अस नीति विचारी ।
वनिता वध कीन्हें अघ भारी ।। १

पाप कर्मों से सदैव दूर रहने वाले, निगम की नीतियों का पालन करने वाले रघुवंशी श्रीराम का सात्विक स्वभाव यहां पर भी आदर्श की रक्षा करता हुआ दिखाई देता है। वे वीर होते हुये भी उदण्ड नहीं थे। अनन्त शक्ति होते हुये भी उनमें असीम शील था। उनका सारा प्रयास, सम्पूर्ण शक्ति अन्याय के शमन, धर्म की रक्षा तथा मानव मात्र के कल्याण के लिये ही था। वे धर्म भीरु थे, मर्यादा के पालक तथा माता, पिता, गुरु के परम आज्ञाकारी थे। जीवन में अपने इन आदर्शों की रक्षा करने के लिये उन्होंने बड़े से बड़े कष्ट को सहर्ष स्वीकार किया, बड़े से बड़े अधिकार अथवा लाभ को उन्होंने सहर्ष त्याग कर दिया। उनमें कर्तव्य पालन का भाव इतना महान था कि उसके लिये वे अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का भी

१- ~~रामचरित मानस~~ - रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा १२८/८

सहर्ष त्याग कर सकते थे। रघुवंश दीपक में राम के ऐसे ही आदर्श चरित्र का चित्रण मिलता है। सहजराम जी के राम आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श बन्धु, आदर्श सखा, आदर्श राजा ,आदर्श पिता,आदर्श स्वामी तथा आदर्श वीर थे । उनके चरित्र में सम्पूर्ण सद्गुणों का समुच्चय प्रस्तुत कर कवि ने उन्हें धीरोदात्त नायक के रूप में चित्रित किया है। रघुवंश दीपक में राम के परिपूर्ण आदर्श चरित्र को देखकर हम इस कथन से पूर्णत: सहमत हो सकते हैं कि परिपूर्ण चरित्र की यह विशेषता है कि उसकी एक ऐसी मूल मार्मिक या केन्द्रीय विशेषता प्रस्तुत की जाये तो उसकी अन्य सब प्रवृत्तियों को प्रभावित या नियंत्रित करती हो। १ राम के चरित्र की मौलिक विशेषता यह है कि उनकी सात्त्विक वृत्ति ही सभी प्रवृत्तियों को प्रभावित तथा नियंत्रित करती है। नर रूप में उनका चरित्र अत्यन्त श्रद्धास्पद तथा विश्वसनीय है। नर रूप में श्रीराम के सर्वोत्कृष्ट चरित्र का उद्घाटन कवि ने वन गमन से लेकर चित्रकूट पर्वत पर निवास करने के लम्बे कथा प्रसंग में किया है। यहां उनके असीम त्याग, धर्म परायणता, माता पिता की आज्ञा का पालन करने की कर्तव्य भावना तथा बड़ी से बड़ी वैयक्तिक हानि को बिना किसी आमर्ष अथवा घृणा के भाव के जागृत हुये ही सहर्ष स्वीकार कर लिया था। यहां वे अपने बन्धु लक्ष्मण की बात भी इसलिये ठुकरा देते हैं क्योंकि वह उनके प्रकृति के विरुद्ध कही जाती है और उसमें घृणा, स्वार्थ तथा बन्धु विरोध का भाव था। इस प्रसंग का प्रारम्भ इस प्रकार होता है। कैकेयी से वचन बद्ध होकर राजा दशरथ उसी के भवन में निरुपाय से शोकाकुल पड़े थे । श्रीराम ज्यों ही वहां पहुंचते हैं कैकेयी के द्वारा सारी घटना का उन्हें ज्ञान होता है। निष्कपट भाव से राम ने मां कैकेयी को जो उत्तर दिया है वह राम के चरित्र का उज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत कर उनकी मूल सात्त्विक वृत्ति का ही उद्घाटन करता है। श्रीराम कहते हैं -

---

१- डिक्शनरी आफ वर्ल्ड लिटरेचर पृष्ठ ५१

अपयश होय कि जग यश भारी।अति धनवंत कि रंक भिकारी ।।
सुरपुर जाउं कि निरै निवासू।पातक पुंजहि पुण्य प्रकाशू ।।
होय चिरायु की आजुहि मरना।पिता वचन सुनि आन न करना।।
पालहिं पोषहिं मातु पितु, श्रम करि सहित सनेह ।
तिनके वचन न करहिं पगुर,परहिं निरै तजि देह ।। १

माता पिता के लिये एक पुत्र के मुख से कर्तव्य परायणता के यह उद्गार सचमुच ही अत्यन्त स्वाभाविक तथा विश्वसनीय हैं । राजा दशरथ स्वयं ही अपनी आज्ञा के पालन न करने की बात जब श्रीराम से कहते हैं तथा उन्हें इस बात की सलाह देते हैं कि उन्हें बांधकर कारागार में डाल कर वे अयोध्या का राज्य प्राप्त करें तो श्रीराम का सात्विक मन माता कैकेयी तथा पिता के द्वारा दी गई प्रथम आज्ञा को ही पालन करने में अधिक सुख का अनुभव करता है और उनके मन में किंचित भी विकार नहीं उत्पन्न होता । धर्म, नीति तथा लोक व्यवहार इन सब का समन्वय हमें श्रीराम के चरित्र में मिलता है। इस अवसर पर भी लक्ष्मण द्वारा जो विरोध प्रदर्शन किया जाता है उसका शमन भी श्रीराम ने लक्ष्मण को विभिन्न प्रकार से धर्म के आधार पर समझा कर किया है। क्षमा,शील, सम ता के मार्ग का अनुसरण करने की सलाह देते हुये वे लक्ष्मण से यही कहते हैं कि -

तातै लषण क्रोध निज त्यागू । क्षमा शील समता पथ लागू ।।
पितु बन्धन कीन्हें नहिं शोभा । बांधहु काम क्रोध मद लोभा ।।
करै जो मातु पिता अपमाना । लोक अयश परलोक निशाना ।।२

राम धर्म के विरुद्ध किये गये किसी भी आचरण को सहन नहीं कर सकते और न मर्यादा के विरुद्ध किये गये किसी कार्य का वे समर्थन कर सकते थे । अपने जीवन में उन्होंने धर्म का सतत पालन किया और मर्यादा की रक्षा में वे सदैव तत्पर दिखाई दिये । ऐसा कोई भी कार्य जो धर्म

१-रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड, दोहा ५६ तथा उसके ऊपर का भाग
२- रघुवंश दीपक, अयोध्या काण्ड, दोहा ७२ तथा ७३ के मध्य की चौपाई

के विरुद्ध मर्यादा का उल्लंघन करता हुआ लोकहित में बाधक सिद्ध हो, राम के सात्त्विक जीवन में स्थान नहीं पा सकता था। वे स्वयं इसका पालन करते थे और साथ ही उनके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक पात्र के लिये ऐसी ही प्रेरणा उनके द्वारा दी जाती थी। इस संबंध में लक्ष्मण, भरत तथा सीता एवं पिता दशरथ व मां कौशल्या के लिये भी उनका यही आग्रह था। लक्ष्मण को दिये गये उपदेश की चर्चा ऊपर की जा चुकी है तथा राजा दशरथ के संबंध में भी ऊपर संकेत किया जा चुका है। यहां भरत, सीता तथा मां कौशल्या को धर्म पालन तथा मर्यादा की रक्षा एवं लोक हित साधना के लिये प्रेरित किये जाने के एकाध प्रसंगों का उद्धरण इस कथन की पुष्टि के लिये पर्याप्त होगा। भरत पुरजन, परिजन सहित राम से भेंट करने तथा उन्हें मनाकर अयोध्या वापस लौटाकर लाने के लिये चित्रकूट पहुंचे। श्रीराम से उनकी भेंट हुई और गुरु वशिष्ठ के द्वारा श्रीराम ने धर्म सम्मत, मर्यादा की रक्षा करती हुई लोकहित साधन में सहायक व्यवस्था की रचना की। गुरु की आज्ञा पाकर श्रीराम ने भरत से सर्व प्रथम यही बात कही कि -

तात भरत सब सोच बिहाई । पालिय पिता वचन दोउ भाई।।
हमहि दीन वन तुम कहं राजू ।पालहु प्रजा समेत समाजू ।।१

भरत ने राम की धर्म सम्मत वाणी सुनकर यद्यपि भक्ति की आड़ लेकर उसमें कुछ संशोधन करना चाहा किन्तु अन्तत: उन्हें श्रीराम की आज्ञा का पालन करना ही पड़ा क्योंकि इसी से उनका, अयोध्यावासियों का पुरजन परिजन तथा लोक कल्याण सम्भव था ।

इसी प्रकार सीता को उपदेश देते हुये श्रीराम ने वही कार्य करने का आग्रह किया है जिससे धर्म का पालन हो और मर्यादा की रक्षा हो । साथ ही बन्धु-कलह न होकर लोक हित संभव हो सके। पिता की आज्ञानुसार भरत को राज गद्दी मिली अत: भरत के सम्मुख कभी भी अपनी प्रभुता तथा प्रभाव को न कहने का उपदेश उन्होंने सीता को देकर इस बात पर विशेष

१- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड दोहा २६६ के बाद की चौपाइयां

बल दिया है कि विपत्ति काल को धैर्य के साथ , अभिमान को छोड़कर, मां की सेवा करते हुये, अपने ही घर में रहकर, पिता के घर न जाकर,अत्यन्त विनम्र होकर काटना ही नारी धर्म है।१यहां वे भारतीय नारी की मर्यादा को भी ध्यान रखकर सीता को उपदेश देते हैं। राम के वनवास के दुख से कातर मां कौशल्या का हृदय दारुण शोक से भर गया था। वे श्रीराम के साथ ही वन जाने का हठ करने लगीं किन्तु राम के वचनों से उनका मोह भंग हो गया और वे सहर्ष उन्हें वन गमन की आज्ञा प्रदान कर देती हैं। वस्तुत: इन प्रसंगों में राम की चारित्रिक विशेषता के उद्घाटन के लिये ही कवि ने भिन्न परिस्थितियों की योजना की है तथा नायक के जीवन की छोटी सी छोटी घटना को अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में सहायक बनाया है। पूर्ववर्ती पृष्ठों में संकेत किया जा चुका है कि महाकाव्य का कवि घटनाओं के संयोजन द्वारा पात्रों के चरित्र उद्घाटन का प्रयास करता है, कवि श्री सहजराम जी ने भी विभिन्न घटनाओं की योजना रघुवंश दीपक के विभिन्न पात्रों के चरित्र चित्रण के लिये की है। राम के जीवन में ऐसी अनेक घटनायें उपस्थित की गई हैं जिनमें उनके वैयक्तिक तथा सामूहिक दोनों प्रकार के जीवन के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से होजाता है और उसमें कवि को किसी प्रकार की कृत्रिमता उत्पन्न करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। राम केचरित्र चित्रण में कवि ने उनके क्रिया कलापों,व्यवहारादि को मनोविज्ञान की दृष्टि से पूर्णत: संगत और स्वाभाविक बना दिया है जिससे उनका चरित्र हमारी सहानुभूति, स्नेह, श्रद्धा, पूज्य भावना आदि उदात्त गुणों को ही नहीं घृणा, आश्चर्य तथा ग्लानि आदि भावों को भी उभारने में समर्थ हो सका है। एक अद्वितीय योद्धा तथा अतुलनीय पराक्रमी एवं सूझबूझ वाले महान सेना नायक के रूप में उनका शौर्य तथा सैन्य संचालन

१- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड दोहा ८० के बाद की चौपाइयां

विभिन्न युद्धों में देखा जा सकता है। विशेषकर जब वे अकेले ही खरदूषण, त्रिशिरादि चौदह सहस्त्र असुर सैनिकों से युद्ध कर उन पर विजयी होते हैं। इस अवसर पर स्वयं उनके विपक्षियों ने उनके शौर्य, सुन्दरता और पराक्रम की सराहना की है। इसी प्रकार लंका पर चढ़ाई करते समय उनका अपने सहयोगियों तथा मित्रों से मंत्रणा करना एवं युद्ध को अनिवार्य बनाने से पहले रावण को समझा बुझाकर मानव संहार से बचने की उनकी इच्छा उन्हें युद्ध के लिये उत्तरदायी नहीं ठहराती अपितु जब युद्ध अनिवार्य हो ही गया हो तो उसमें कायरता का प्रदर्शन न कर पूर्ण जिम्मेदारी के साथ उस पर विजय पाने का उनका सतत् प्रयास उनको एक महान् लोक नायक तथा विजयी योद्धा के रूप में प्रतिष्ठित करता है। वे बैरी का सम्मान भी करते थे क्योंकि उनकी दृष्टि में बैर किसी के जीवन का स्थायी भाव नहीं हो सकता। रावण उनका शत्रु था किन्तु उसकी वीरता तथा उसके पराक्रम का उन्होंने सम्मान किया था। रावण की मृत्यु के पश्चात् उसकी अंत्येष्टि की व्यवस्था करवा कर उन्होंने शत्रु के प्रति भी अपना उदात्त मानवी भावना का परिचय दिया था। इसी प्रकार बालि वध पर भी उनकी इसी भावना को स्पष्ट देखा जा सकता है।

सहजराम जी ने श्रीराम को आदर्श मित्र के रूप में भी चित्रित किया है। 'रघुवंश दीपक' में राम के सखा के रूप में मुख्य रूप से निषाद, सुग्रीव तथा विभीषण का उल्लेख मिलता है। इन तीनों में निषाद की मैत्री निस्वार्थ तथा सहज थी। सुग्रीव की मैत्री भय निवारण के लिये तथा विभीषण की मैत्री शरणागत भक्ति भाव से युक्त थी। राम ने इन तीनों के साथ पृथक पृथक स्तर की मैत्री का निर्वाह किया किन्तु उनके चरित्र में किसी के प्रति उपेक्षा अथवा तिरस्कार के भाव नहीं उत्पन्न हुये। उनकी दृष्टि में मैत्री की मुख्य विशेषता जिसे वे नीति से पोषित मानते थे, इसप्रकार थी -

अन्तर्भाव कपट तजि भाषत। सखा सखा सन भेद न राखत ।।
अन्तर ठाटी कपट की तोरिअ जोरिय प्रीति ।
कपटी मित्र न अरि भलो, मानत कोउ न प्रतीति ।।

तात सखा कोउ कोउ अस कहईं। उर अति क्रूर वचन मृदु कहईं ।।
शुभाकार उर वृति विकारा ।जिमि मयूर वन गहन अपारा।।
सपदि सखा अस त्यागिय कैसे । विष रस कुम्भपयो मुख जैसे ।१

सुग्रीव भले ही अपना कार्य पूर्ण हो जाने पर राम के कार्य का विस्मरण कर बैठा हो किन्तु उस पर क्रोध कर के भी उसे मित्र के नाते ही समझा बुझाकर पुन: कर्तव्य का ज्ञान कराने की इच्छा उनके आदर्श मित्र रूप को ही उभारता है। विभीषण के प्रति राम के हृदय में सदैव यही भाव रहे कि वह निष्कपट ,साधु स्वभाव वाला, सरल, भक्त तथा शरण में आया हुआ अकिंचन मित्र है। अस्तु उसकी रक्षा अपना सर्वस्व देकर भी करना उनके लिये श्रेयस्कर था। किंचित भी विचार किये बिना ही उन्होंने पहुंचते ही उसे लंका का राजा घोषित कर दिया। विभीषण की इस मैत्री में राम के दो रूप सामने आते हैं एक उनका राजनीतिज्ञ रूप तथा दूसरा सरल सच्चे-मित्र का रूप । इन दोनो ही रूपों में राम का चरित्र उनको चारित्रिक गरिमा के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करता है। विभीषण मित्र तथा भक्त दोनो ही था इसलिये श्रीराम को उसकी चिंता अहर्निशि बनी रहती थी क्योंकि शरण में आये हुये विभीषण को उन्होंने अभयदान दिया था और साथ ही लंका का राज्य भी। अत: लक्ष्मण के शक्ति लगने पर जहां उन्हें बन्धु निधन,सहोदर भ्राता के विछोह का दुख था वहां वे इस बात से और भी अधिक दुखी थे कि विभीषण का क्या होगा । सहजराम जी ने इस अवसर का चित्र इसप्रकार खींचा है -

इन्द्रराज सम राज तजि, हम जग अपयश लीन्ह ।
शूर शिरोमणि बन्धु प्रिय, बनिता हित बलि दीन्ह।।
पिता मरण पुनि परवश सीता। भ्राता म मरण काल विपरीता।।
सीता हरण केर दुख थोरा । तुमहिं विलोकि कक कलेश कठोरा।।

१- रघुवंश दीपक किष्किन्धा काण्ड दोहा ७ से पहले की एक चौपाई व तथा उसके बाद की चौपाइयां ।

तेहि दुख ते दुख कठिन विशेखी ।तात विभीषण की गति देखी ।।
भयउ निराश शरणमम आई । काके भवन विभीषण जाई ।। १

रघुवंश दीपक में राम की एक चारित्रिक विशेषता यह चित्रित की गई है कि वे यद्यपि समदर्शी है किन्तु अपने भक्तों के प्रति उनका विशेष लगाव बना रहता है और समय आने पर अपने समदर्शीपन को भूल कर भक्तों के साथ पक्षपात करते दिखाई देते हैं। इस सबंध में कवि ने स्थान स्थान पर ऐसे प्रसंगों की रचना की है जहां राम अपने भक्तों की रुचि रखने के लिये अपनी विरुद्ध की भी चिंता नहीं करते और न इस बात की ही चिन्ता करते हैं उन्हें किसी प्रकार का अपयश मिलेगा अथवा उनकी कीर्ति को कलंकित होना पड़ेगा। श्रीराम के इस चरित्र चित्रण में कवि की निजी भक्ति भावना तथा भक्ति रस में निरन्तर लीन रहने वाले उन अनन्य भक्तों की भक्ति पद्धति की मूल भावना काम करती है जिनके सबंध में परम्परा से यह प्रसिद्ध है कि भगवान का अवतार उन्हीं की रक्षा तथा रुचि को पूर्ण करने के लिये होता है। भरत की भक्ति से वशीभूत होकर श्रीराम अपना सब कुछ भूल जाते हैं और जिस पिता की आज्ञा के लिये वे वन गमन कर सके उसे भी एक बार भूल कर भरत की रुचि तथा उनकी इच्छा की पूर्ति का वचन दे देते हैं। चित्रकूट में श्रीराम ने भरत से कहा कि -

तात भरत अब कहहु सो करहूं ।पिता बचन निज प्रण परिहरहूं ।।
भ्राता तजौं तजौं बैदेही। सर्वस तजौं तजौं निज देही ।।
अयश होय परलोक नशाई । वचन तुम्हार तजौं नहिं भाई।।२

वस्तुत: राम की यह घोषणा भरत की रुचि रखने के लिये ही की गई है। इसी प्रकार अन्य प्रसंगों में लक्ष्मण ,हनुमान,सुग्रीव तथा विभीषण के प्रति कहे गये श्रीराम के वचनों में उनकी भक्त वत्सलता का ही विशेष स्वर मिलता है । श्रीराम ने स्पष्ट ही यह घोषणा की है कि-

---

१- रघुवंश दीपक-लंका काण्ड- दोहा ५५ तथा उसके बाद की चौपाइयां
२- रघुवंश दीपक-अयोध्या काण्ड-दोहा २७८ के बाद की चौपाइयां

यद्यपि मैं सचराचर स्वामी। मोहि ते अधिक मोर अनुगामी।।१

इसी प्रकार लक्ष्मण से उन्होंने अनन्य भाव से भजने वाले भक्त के सबंध में इस प्रकार कहा है -

शरणागत की सुधि न बिसारी। जिमि जननी निज बालक वारी।।
सोवे बालक मातु भरोसे । तन मन वचन बनै तेहि पोसे ।।
शरणागत है विरद हमारा। तजौ न तिहि करि दोष विचारा।।२

महाकाव्य का नायक होने के कारण कवि ने राम के चरित्र को विभिन्न दृष्टिकोणों से परख कर प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा किये गये विभिन्न कार्यों तथा व्यवहारादि को श्रीराम के शील संविधान का भी कवि ने पूरा ध्यान रखा है। माता,पिता,गुरु तथा अपने से बड़े पूज्य एवं श्रद्धास्पद लोगों के प्रति राम का शील अत्यन्त सराहनीय तथा उच्च कोटि का प्रदर्शित किया गया है। अपने भाइयों केसाथ उनका व्यवहार तथा सेवक एवं पुरजनों के साथ किया गया उनका व्यवहार उनके शील के उच्चतम उदाहरण हैं। इस सबंध में कतिपय प्रसंग अत्यन्त मार्मिक तथा भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर राम के हृदय के गूढ़तम प्रदेश को उद्घाटित करने का प्रयास कवि ने किया है। जिनमें पुष्पवाटिका में भ्रमण करते समय लक्ष्मण सहित जब उनकी प्रथम भेंट सीता से होती है उस समय का उनका आत्म विश्लेषणात्मक कथन, विश्वामित्र के सम्मुख उनका शिष्ट तथा शील से युक्त आचरण, राजा दशरथ द्वारा युवराज पद देने के समय का उनका कथन तथा श्रीराम द्वारा कहे गये वाक्य, वन गमन के समय लक्ष्मण, कौशल्या,सीता तथा गुरु वशिष्ठ के समक्ष श्रीराम द्वारा कहे गये वाक्य, चित्रकूट में निवास करते समय वनवासियों के प्रति उनका व्यवहार तथा ऋषियों , मुनियों के प्रति उनके आदरयुक्त भाव, भरत के चित्रकूट आगमन पर लक्ष्मण द्वारा प्रकट कियेगये रोषयुक्त वचन तथा श्रीराम का

१-रघुवंश दीपक उत्तर काण्ड - दोहा ७३ केबाद की चौपाई ।
२- वही - उत्तरकाण्ड दोहा १२७ के बाद की चौपाइयां ।

उनको उपदेश देकर भरत के प्रति प्रकट किये गये उनके आन्तरिक भाव, भरत को अयोध्या लौटने के लिये तैयार कर लेना तथा कैकेयी द्वारा प्रकट की गई ग्लानि, इन सभी प्रसंगों में राम के शील को ही उच्चतम् रूप में रखकर कवि ने उनके चरित्र का वैशिष्ट्य प्रकट किया है। राम अत्यन्त कृतज्ञ, शील,निधान, परहित रक्षक, महान नीतिमान तथा धर्म भीरु लोक मर्यादा के रक्षक थे। कवि ने उनके चरित्र में कहीं भी गिरावट नहीं आने दी। नर रूप में उनका महच्चरित्र अत्यन्त प्रेरक तथा श्रद्धास्पद प्रस्तुत किया है। संभवत: राम के नर चरित्र को कवि ने इसलिये इतने व्यापक तथा उच्च स्तर पर प्रस्तुत किया है जिससे वह समाज के लिये अनुकरणीय बन सके ।

' रघुवंश दीपक ' में श्रीराम के चरित्र चित्रण में कवि ने उन सभी पद्धतियों का अनुसरण किया है जिनके माध्यम से महाकाव्य के नायक का स्वाभाविक चरित्र चित्रण सम्भव हो सके। साधारणत: कवि को चरित्र चित्रण में जिन मुख्य बातों की ओर ध्यान रखना पड़ता है उनका उल्लेख हम पूर्ववर्ती पृष्ठों में कर चुके हैं । यहां उनका प्रसंग-वश संक्षिप्त विवेचन ही पर्याप्त होगा ।

कार्य व्यापार अथवा पारिवारिक, सामाजिक व्यवहारादि- के बहुत से उदाहरण पिछले पृष्ठों में दिये जा चुके हैं अस्तु इस विषय पर अधिक विचार करना केवल विस्तार मात्र ही होगा। संवाद द्वारा कवि ने नायक के चरित्र का उद्घाटन बड़े स्वाभाविक ढंग से किया है। इस संबंध में जनक वाटिका में लक्ष्मण से राम का संवाद, जनकपुर में सखियों से विभिन्न उपहास आदि करते समय श्रीराम का उनसे बातचीत करना, परशुराम सम्वाद, राज्याभिषेक के लिये राजा दशरथ के साथ श्रीराम का संक्षिप्त संवाद, वन गमन के अवसर पर पिता राजा दशरथ, मां कौशल्या तथा कैकेयी, पत्नी सीता बन्धु लक्ष्मण गुरु वशिष्ठ तथा बाद में सुमन्त के साथ किये गये संवाद चारित्रिक विशेषता के उद्घाटन के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार चित्रकूट में भरत के साथ श्रीराम संवाद, कैकेयी को उपदेश देना तथा वन मार्ग में चित्रकूट से चलते समय अन्य लोगों से राम का संवाद बालि वध के समय बालि के साथ उनका संवाद, सुग्रीव को उपदेश देते समय

हनूमान से भेंट के समय परिचयात्मक बातचीत, विभीषण से बातचीत रावण से युद्ध के समय की गई बातचीत एवं लक्ष्मण के साथ पारमार्थिक वार्ता तथा भक्ति, ज्ञान, संत, असंत माया, ब्रह्म जीव आदि विषयों पर किये गये उनके उपदेशात्मक संवादों में कवि ने उनके स्वरूप के विभिन्न पक्षों तथा उनके आन्तरिक भावों एवं चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

अन्य पात्रों द्वारा प्रकट किये गये उद्गार तथा सम्मतियों के माध्यम से भी सहजराम जी ने रघुवंश दीपक में श्रीराम के चरित्र पर प्रकाश डाला है। ऐसे पात्र उनके निकट के भक्त, बन्धु, सखा, माता, पिता, सासु, श्वसुर, गुरु आदि तो हैं ही, कुछ अन्य ऐसे पात्र भी हैं जो उनके बैरी तथा प्रतिपक्षी हैं। रावण, मन्दोदरी, मारीचि, कुम्भकरण आदि राक्षसों ने भी राम के चरित्र पर अपने उद्गार प्रकट किये हैं जिनमें या तो उनके परम ब्रह्मत्व की ओर संकेत कर उनसे बैर न करने का सुझाव दिया गया है या फिर उनके बल, पराक्रम, शौर्य, शील आदि गुणों का वर्णन कर उनकी शरण में जाने की बात कही गई है। इसी प्रकार वनवासी ऋषि, मुनियों ने भी श्रीराम के पावन चरित्र का गुण गान कर उनके परम कारुणिक, दयालुता, भक्तवत्सलता तथा कारण रहित कृपालु होने के विशिष्ट गुणों से संबंधित उद्गार हैं। इसी प्रकार गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र तथा परशुराम जैसे तत्वज्ञानियों एवं तपस्वियों के मुख से भी जिन शब्दों का प्रयोग कवि ने राम के चरित्र पर प्रकाश डालने के निमित्त किया है वे भी उनके या तो नारायणत्व का उद्घाटन करते हैं या फिर नर रूप में किये उनके चरित्रों को उजागर करने के लिये हैं।

रघुवंश दीपक में श्रीराम के द्वारा किये गये स्वगत भाषण नहीं के बराबर हैं। इसीप्रकार स्वप्न दर्शन या नींद में कहे गये प्रसंग भी अत्यल्प हैं। केवल माता सुमित्रा तथा त्रिजटा के द्वारा ही स्वप्न दर्शन के प्रसंग मिलते हैं जिनमें श्रीराम के प्रताप तथा सामर्थ्य एवं शील पर ही प्रकाश पड़ता है। वेशभूषा के माध्यम से नायक के ही नहीं अन्य पात्रों के चरित्र चित्रण

में कवि ने बड़ी सहायता ली है। उसने जहां कहीं अवसर मिला है राम तथा अन्य पात्रों के वेश का वर्णन करते हुये उनके सौन्दर्य को प्रत्यक्ष करने का प्रयास किया है। राम तथा उनके भाइयों के बाल्यावस्था की वेशभूषा, राजकुमार के रूप में विश्वामित्र के साथ यज्ञ रक्षार्थ बन्धु लक्ष्मण के साथ तपोवन की और जाते समय, जनकपुर में दोनों ही बन्धुओं के आगमन के समय वन गमन के समय सीता सहित दोनों भाइयों का मुनि वेश में वर्णन, युद्ध के समय योद्धा के रूप में, अयोध्या लौटकर राज्याभिषेक के समय का वेश वर्णन कवि ने इसी उद्देश्य से किया है कि विभिन्न परिस्थितियों में तथा घटनाओं में राम के साथ ही अन्य पात्रों के चरित्र का उद्घाटन स्वाभाविक रूप से हो सके ।

हर्ष, शोक, उत्साह, आमर्ष तथा क्रोध एवं ग्लानि के भावों को प्रदर्शित करने के लिये कवि ने राम की विशेष मुख मुद्रा तथा अन्तर्द्वन्द्व द्वारा मनोवैज्ञानिक पद्धति का आश्रय लेकर नायक के विस्तृत तथा महान चरित्र का उद्घाटन किया है। विषाद तथा विरह के क्षणों में श्रीराम की मानसिक स्थिति का चित्रण तथा मानवीय संवेदना से युक्त उनके व्यवहार को चित्रित कर सहजराम जी ने उसे अत्यधिक स्वाभाविक तथा विश्वसनीय बना दिया है। इसी प्रकार वन गमन के समय राम की मानसिक स्थिति, सीता हरण पर किया गया विलाप एवं लक्ष्मण को शक्ति लगने पर उनका करुण क्रन्दन तथा कैकेयी के प्रति उसी समय व्यक्त किये गये उद्गार १ राम के नर रूप को ही अधिक स्वाभाविक तथा प्रभावशाली रूप में उद्घाटित करने में सफल हो सके हैं ।

चरित्र चित्रण में प्रतिपक्षी पात्रों द्वारा कवि ने नायक के चरित्र संबंधी विविध पक्षों का उद्घाटन किया है। रावण २, कुम्भकरण, मेघनाद

१- रघुवंश दीपक लंका काण्ड दोहा ५५ तथा उससे पूर्व की चौपाई -
" हा कैकेयी कुमारग गामिनि। मयसि भानुकुल पंकज यामिनि।।

२-रघुवंश दीपक - अरण्य काण्ड दोहा ७८(२)(३) तथा उसके बाद की चौपाइयां ।

तथा खरदूषण, त्रिशिरादि राक्षसों ने राम को ब्रह्म का अवतार तो माना ही था किन्तु उनको नर रूप में महान बलशाली योद्धा, महान् सौन्दर्य से सम्पन्न अत्यन्त धीर वीर कुशल धन्वी भी स्वीकार किया था। मारीचि तथा सूपर्णखा के द्वारा राम के सौन्दर्य तथा बल एवं प्रताप का वर्णन भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रसंग है ।

चरित्र चित्रण की एक विशिष्ट पद्धति यह भी है कि पात्रों द्वारा आत्म विश्लेषण करवा देने पर उनकी प्रवृत्ति, व्यवहार, शील आदि का उद्घाटन हो जाता है। यहां कवि पूर्णत: मनोवैज्ञानिक पद्धति का सहारा लेता है और अपने मनोदेश में उसने जिस चित्र को संवारा है उसको ही पूर्णत: साकार करने के लिये वह पात्र के हृदय प्रदेश में प्रवेश कर आत्म-विश्लेषण के माध्यम से एक कुशल चित्रकार की भांति कार्य करता है । आत्म विश्लेषण में भी पश्चाताप, ग्लानि, आत्म दर्शन, भले बुरे कर्मों के प्रति पात्र की अपनी स्वयं की खोज बीन वाली दृष्टि, चरित्र सबंधी उस समस्या को बड़ी सरलता से हल कर देते हैं जिनके लिये कवि को अलग अलग कई प्रसंगों की रचना करनी पड़ती है। श्रीराम के चरित्र में आत्म - विश्लेषण के अवसर बहुत से आये हैं, जिनमें वनवास का समय १, सुग्रीव को भय दिखाकर सीता की खोज करने के लिये प्रवृत्त करने का प्रसंग २ तथा सीता परित्याग ३ एवं लक्ष्मण को विभिन्न अवसरों पर दिये गये उपदेश के अवसर पर स्वयं अपने मुख से ही अपने सबंध में उनका कथन आत्म-विश्लेषण की ही कोटि में लिया जा सकता है ।

वस्तुत: उपर्युक्त विवेचन से यह तात्पर्य निकाला जा सकता है कि रघुवंश दीपक में कवि ने नायक के चरित्र चित्रण में उन सभी पद्धतियों का अनुसरण किया है जिनके द्वारा महाकाव्य के महच्चरित्र को प्रस्तुत किया

१- रघुवंश दीपक-अयोध्याकाण्ड दोहा ७६,तथा बाद की चौपाई
२- वही - किष्किन्धा काण्ड दोहा ३८ और ४० के मध्य की चौपाइयां
३- वही - उत्तरकाण्ड दोहा ७४ तथा ७५ के मध्य की चौपाइयां

जा सकता था। कवि की कुशलता यही रही है कि उसने विभिन्न दृष्टिकोणों से राम के समग्र जीवन को देखने का प्रयास किया है और विभिन्न मानव भावों के सफल चित्रांकन में वह निश्चित ही सफल रहा है। उसके राम नर और नारायणत्व दोनों रूप में हमारे सामने अपने उदात्त एवं अलौकिक चरित्र से युक्त होकर आते हैं और हमें प्रेरणा प्रदान कर कर्म पथ पर अग्रसर करते हैं। नर और नारायणत्व के अपूर्व संयोग से ही रघुवंश दीपक के चरित्र नायक राम, वाल्मीकि, तुलसी आदि सब से अलग दिखाई देते हैं। ब्रह्म होकर भी वे नर लीला के प्राकृत रूप में सम्पूर्ण मानवीय संवेदनाओं से युक्त दिखाई देते हैं। नारायण के रूप में उनका चरित्र जहाँ हमारी उपासना, भक्ति तथा साधना का सम्बल बनता है वहां उनका नर रूप हमारे लिये प्रेरक, अनुकरणीय तथा समस्त मानवीय विकारों को परितुष्ट करने वाला अत्यन्त विश्वसनीय बन जाता है। श्रीराम के चरित्र चित्रण में कवि की सर्वोत्तम उपलब्धि यही है कि उसने राम के व्यक्तित्व में भावावेग और सम्वेदनशीलता की सृष्टि प्रचुर मात्रा में करके उन्हें एक मानव के रूप में चित्रित किया है जो लोकमत, सामाजिक मान्यताओं और परम्परागत आदर्शों के प्रति निरन्तर सजग तथा सचेष्ट रहा है। रघुवंश दीपक में श्रीराम एक लोक नायक, धर्म भीरु प्रजावत्सल सम्राट तथा विभिन्न मानवीय सबंधों के उच्चतम् जीवन मूल्यों एवं नैतिक आदर्शों के पालक तथा उन्नायक के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं।

२- भरत का चरित्र

श्रीराम के पश्चात् रघुवंश दीपक के दूसरे प्रमुख महत्वपूर्ण सात्विक आदर्श पात्र भरत ही हैं। श्रीराम की ही भांति भरत के जीवन में भी सात्विक भाव केन्द्रीय भाव के रूप में सम्पूर्ण चरित्र को नियंत्रित तथा प्रभावित करता दिखाई देता है। वे श्रीराम के भक्त, अनुगामी, बन्धु तथा सेवक के रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। सर्वतोभावेन उन्होंने अपने आपको

श्रीराम के लिये समर्पित कर दिया था और स्वप्न में भी उनके हृदय में राम के प्रति द्वेष अथवा तिरस्कार या घृणा के भाव नहीं उत्पन्न हो सकते थे । वे भी मर्यादा के रक्षक, धर्म पथ पर चलने वाले संत स्वभाव के महान धीर, वीर तथा सरल व्यक्ति थे। रघुवंश दीपक में भरत का चरित्र यद्यपि श्रीराम की भांति विस्तृत तथा ~~प्रत्येक~~ जीवन की सर्वविध परिस्थितियों में पड़कर विकसित होने वाला नहीं प्रस्तुत किया गया किन्तु सीमित होते हुये भी उसमें गहराई अधिक है तथा मानवीय उदात्त भावनाओं के उद्घाटित करने का पूर्ण अवकाश उसमें मिलता है। अपने सरल स्वभाव, निष्कपट व्यवहार तथा राम के अनन्य भक्त होने के कारण वे श्रीराम के महान् कृपा पात्र, विश्वसनीय तथा राम के महान् अभियान में सहायक सिद्ध होते हैं। भरत को माता की चालाकी से पिता के वचनबद्ध होने के कारण अयोध्या का राज्य मिलता है। वे श्रीराम के स्थान पर दशरथ के उत्तराधि घोषित किये जाते हैं, किन्तु इससे उन्हें किंचित भी सुख नहीं मिलता और न वे इसपर अपनी सहमति ही प्रकट करते हैं। उनकी दृष्टि में रघुवंश की वंश परम्परा के अनुकूल ही ज्येष्ठ बन्धु को राज्य का उत्तराधिकारी युवराज पद मिलना चाहिए और उसी में वंश की मर्यादा , लोक धर्म की रक्षा तथा श्रुति सम्मत धर्म पथ का पालन सम्भव हो सकता है। मां कैकेयी के द्वारा किये गये समस्त प्रपंच को वह अनैतिक, मर्यादा का उल्लंघन करने वाला पाप से भरा हुआ लोक धर्म का विनाशक मानते हैं और इसके लिये वे अपनी मां को भी कठोर शब्द कहने में नहीं संकोच करते। भरत के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें ढूंढ़ने पर भी ~~कहीं एक भी धब्बा नहीं मिलता और~~ न कालिमा का एक भी चिह्न उनके पावन चरित्र में नहीं दिखाई देता है ।

भरत के चरित्र का मुख्य विन्दु उनकी वह आत्म ग्लानि है जो स्वयं उनके कर्म का प्रतिफल न होकर उनकी मां के द्वारा रचे गये षड्यंत्र के कारण उत्पन्न होती है । उन्हें इस बात से ही महान् ग्लानि और

मानसिक दुख होने लगा था कि लोग इस षड्यंत्र में उनकी सहमति मानेंगे, अतः यह स्पष्ट है कि वे लोकभीरु थे। ~~साथ ही~~ उनमें यह बात सहन तक करने की सामर्थ्य न थी कि राम को वन भेजने के लिये मां के साथ उनकी भी सलाह थी। जो कुछ हुआ उनकी अनुपस्थिति में हुआ, जब वे ननिहाल में थे। उन्होने वहाँ दु:स्वप्न देखा। उसके शमन के लिये ब्राह्मणों को दान देकर भगवान शिव के नाम का जप किया। भावी अनिष्ट की कल्पना मात्र से उनका हृदय दहल गया और वे भाइयों, पिता तथा परिवार के लिये छटपटा पड़े। दूतों के द्वारा गुरु वशिष्ठ का सन्देश पाकर वे अयोध्या के लिये चले, मार्ग में बहुत से अपशकुन हुये जिससे भरत का हृदय शंकित तथा चंचल हो उठा। अयोध्या के निकट पहुंचते ही उन्हें चारों और एक विशेष उदासी दिखाई पड़ने लगी, नगर की रम्यता, कोलाहल तथा उसकी वैभव सब फीका सा दिखाई दे रहा था। शंकित हृदय से भरत ने गणपति का स्मरण अयोध्या में प्रवेश किया, जहां उन्हें सूनी बाज़ार, गली, दूकानें सब इसप्रकार लग रही थीं मानों श्मशान हों। पुरवासी जो भी उन्हें मिलते हैं खिन्न तथा चचंल दिखाई देते हैं। कुछ तो उन्हें प्रणाम करते हैं किन्तु कुछ उन्हें भी कैकेयी के मत में सम्मत मानकर मुंह फेर लेते हैं। यहां पर कवि ने अत्यन्त स्वाभाविक रूप से पुरवासियों के द्वारा विभिन्न मानवीय स्वभावों का चित्र उपस्थित किया है। कुछ पुरवासियों का मत है कि जिस प्रकार विष की बेलि से अमृत फल नहीं मिल सकते, ठीक उसी प्रकार कैकेयी के पुत्र होने के कारण भरत भी कैकेयी के षड्यंत्र में अवश्य ही सम्मिलित होंगे। किन्तु किन्तु उन पुरवासियों में जो साधु प्रकृति के हैं और भरत के स्वभाव तथा शील से परिचित हैं वे भरत को दोष न देकर उन्हें इससे अलग मानते हैं। वस्तुत: अयोध्यावसियों के इस स्वाभाविक वार्तालाप को सुनकर भरत को भावी अनिष्ट की सूचना तो मिल जाती है किन्तु पूर्ण विवरण उन्हें अपनी मां कैकेयी के मुख से ही प्राप्त होता है। कनक-थाल में आरती सजाकर सखियों सहित कैकेयी भरत की अगवानी करने द्वार पर आती है। बड़े उत्साह तथा प्रेम से वह भरत की आरती कर उन्हें महल के अन्दर ले जाकर सुन्दर

आसन पर बिठाकर बड़े स्नेह से अपने मायके के कुशल समाचार पूंछती हैं। वहां के कुशल समाचार बतलाकर भरत अपने भाई शत्रुहन सहित अपने कुल की कुशलता पूंछने लगते हैं। उन्हें पिता दशरथ की शैय्या खूब सूनी दिखाई देती है जिससे उनके हृदय में शंका व्याप्त हो जाती है और वे पिता की कुशलता पूंछने लगते हैं। इस सम्पूर्ण प्रसंग को कवि सहजराम जी ने इतनी कुशलता से प्रस्तुत किया है कि उस समय का विषाद पूर्ण चित्र अपने आप ही साकार हो उठता है। भरत तथा कैकेयी के सम्वाद रूप में जो प्रश्नोत्तर अंकित किये गये हैं वे अत्यन्त चुस्त, तीक्षाण तथा व्यापक प्रभाव उत्पन्न करने वाले हैं। इस प्रसंग की बानगी लेना विषयान्तर न होगा -

देखि राम सेज शुचि सूनी । देखि भरत मन विस्मय दूनी ।।
अहो मातु कहं पिता हमारे। सुत वियोग सुरलोक सिधारे।।
सो सुत कवन सवति सुन मानी। सवति सो कवन कौशिला रानी।।
गये कहां वन दक्षिण देशा । कारण कवन पिता उपदेशा ।।
का अपराध मातु तिन कीन्हा । सुनि पापिनि पुनि उतरु न दीन्हा।।
तात तात कहि तात कहि, उपजा उर परिताप ।
राम राम कहि राम कहि, लागे करन विलाप ।।१

भारत को वस्तु स्थिति का ज्ञान होते ही उनका हृदय दारुण संताप से भर उठता है। वे विलाप करते हुये कहते हैं -

सत्य वचन कहु कैकेयी, पापिनि सांपिनि रूप ।
लैहै मोहिं कि छांड़िहै, किये कालवश भूप ।।
कीने मातु कि मातुमिस, मीचु मोहिं सन्देह ।
करिहै रविकुल कालवश, चले भरत तजि गेह।।२

वे स्पष्ट अपने मन की व्यथा इसप्रकार कहते हैं -

ते जननी मैं बालक तोरा । को न कहिहिं जग सम्मत मोरा।।
राम लखन सिय बन पर हेली । उरपाहन धरि रहसि अकेली।।

१- रघुवंश दीपक - अयोध्या काण्ड -दोहा १६२ केबाद १६३ तक
२- वही - दोहा १६६ (२)

राम विमुखता मुख मसि लागी । देखिबे योग न मातु अभागी ।।१

आत्म ग्लानि से भरा हुआ संतप्त हृदय लेकर भरत कौशल्या के समीप पहुंचते हैं उन्हें अत्यन्त दुर्बल, विलाप करती हुई, राम के वियोग में दुखी देखकर भरत दूर से ही विलाप करते हुये उनके चरणों में गिरकर रुदन करने लगते हैं । यहां पर भी भरत का हृदय ग्लानि से ही भरा हुआ है और वे -

हा, रघुपति हा, प्राण सनेही । हा सौमित्र,मातु वैदेही।।
तुमहिं दीन्ह वन कमल प्रसूती । मोहि पायी कहं राजविभूती।।२

कहकर पश्चाताप ही करते हैं । मां कौशल्या ने उन्हें समझाया, सान्त्वना दी किन्तु भरत को ऐसा लगता है कि मां के हृदय में भी यह सन्देह उत्पन्न हो गया है कि राम को वनवास देने तथा अयोध्या का राज्य अपने लिए प्राप्त करने में भरत का अपनी मां कैकेयी के साथ अवश्य सहमति है। इस एक मात्र सन्देह ने भरत के हृदय को तार तार कर दिया और वे कौशल्या के समीप विभिन्न प्रकार से अपने हृदय की जलन तथा ग्लानि एवं इस षाडयन्त्र में उनका किंचित भी हाथ नहीं है और न वे इसके सबंध में कुछ भी जानते हैं, यह सिद्ध करने के लिये उन्होने अनेक प्रकार की शपथों का उल्लेख किया। ससांर में जितने प्रकार के पाप हो सकते हैं, सबका फल भरत भोगने को उद्यत थे यदि इस प्रसंग मेंउनका किंचित भी मत रहा हो या उससे उनका किंचित भी सबंध रहा हो। भरत के चरित्र की गरिमा प्रकट करने के लिये कवि ने इस प्रसंग को इस प्रकार प्रस्तुत किया है -

गुरु पितु मातु बन्धु वध कीन्हें । परधन पर वनिता हरि लीन्हे ।।
जे अघ धेनु धरामर मारे । जन नीड़ा खग नीड़ उजारे ।।
भूप निधन धन तीरथ यांचे । जल्पहिं कल्पित वचन असांचे ।।
इतने अघन करे फल लहउं । जो मैं मातु मते महं अहउं ।।

१- रघुवंश दीपक- अयोध्या काण्ड दोहा १६६ के बाद की चौपाइयां
२- वही - दोहा १६७ के बाद की चौपाइयां

जे अबला बालक वध करहीं । कुलतिय तजि कुल्टा मन धरहीं ।।
जे अघ अघ अम्बु महं चूके । जे अघ नगर ग्राम व पुर फूंके ।।
जे अघ चौथि चन्द्, अब लौके । जे तीरथ ब्रात ब्रत छेके ।।१
जे अघ मातु पिता अपमाने । जे अघ दात्री समर पराने ।।
जे अघ बाछा गाय बिछोये । जे अघ साफं प्रात के सोये ।।
तिनकी गति मोहि दे करतारा । जो जननी मत होय हमारा।।२

इतनी सफाई देकर भी भरत का मन शान्त नहीं हुआ क्योंकि उनको लग रहा था कि उन पर कोई विश्वास नहीं कर रहा । उन्हें तो बार बार यही पश्चाताप संतप्त कर रहा था कि इस सम्पूर्ण उत्पात में उनको ही कारण बताया गया है और उनकी आन्तरिक पीड़ा तथा हृदय की बात सिवाय श्री राम के अन्य कोई नहीं समझ सकता। वे कहते हैं -

विधि वश साह चोर गति पाई । मानै कोउ न शपथ सत खाई ।।
न्याउ मोर रघुपति पद लागै । चोर साह जिमि पावक दागै ।।३

मां कौशल्या ने यद्यपि उन्हें सम्पूर्ण दोषों से मुक्त कर निष्कलंक कह दिया था किन्तु भरत का मन अब भी शांत नहीं था और वे गुरु के समीप यह कह कर रो पड़े -

मैं कैकेयी सुवन मुनि नायक । भरत नाम भ्राता सुख दायक ।।
पिता मरण कारण कुल घाती। जेहि लगि भयो लोक उत्पाती।।
समुझि मातु करतब दुख दूना । भरत ग्लानि मानि मन ऊना।।४

भरत का का निर्मल सात्विक हृदय न तो अपने वैयक्तिक हित या लाभ से प्रसन्न था और न उसे राज्य पद प्राप्त करने का किंचित भी लोभ था । उसे तो केवल यही संताप था कि उसके कारण ही सारे उत्पात खड़े हो गये हैं और वही अपने वंश का घातक सिद्ध हो रहा है ।

१- रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड दोहा १९९ से २०१ के मध्य तथा बाद की चौपाइयां ।

२- वही - दोहा २०१ के बाद की चौपाइयां

३- वही - दोहा २०२ के पूर्व की चौपाई

४- वही - दोहा २०३ के बाद की चौपाइयां

सरल तथा निश्छल हृदय लोकापवाद के एक हलके से झटके में ही टूक टूक हो जाता है। भरत की भी यही स्थिति थी। रह रह कर उनका मन इस आशंका से विचलित हो उठता था कि उनके ही कारण राम को वनवास जाना पड़ा। १ भरत के चरित्र में कवि ने उन सभी मानवीय विकारों, घृणा, शोक, ग्लानि, संताप तथा ऊहा-पोह से सम्पृक्त अन्तर्द्वन्द्व को चित्रित किया है जो हमारे जीवन में निरन्तर ओत रहते हैं। यही कारण है कि भरत का चरित्र अधिक विश्वसनीय तथा मनोवैज्ञानिक हो सका है।साधु चरित्र वाले भरत में कवि ने त्याग, निस्पृह तथा कर्ममय जीवन की आदर्श झांकियां प्रस्तुत कर उन्हें अत्यन्त श्रद्धास्पद बना दिया है। राम के निरन्तर साथ रह कर भी लक्ष्मण का हृदय भरत के प्रति शंकित बना रहता है और उन्हें वे कुटिल कुबन्धु कहकर अपना रोष व्यक्त करते हैं किन्तु भरत के हृदय में ऐसी दुर्भावनाओं को कभी भी स्थान नहीं मिला, अपितु वे निरन्तर उनके कुशल क्षेम की चिन्ता से ही ग्रस्त रहते हैं। स्वयं राम ने उन्हें साधु शिरोमणि, शील निधान जैसे विशेषणों से संबोधित कर पृथ्वीपर उनके समान अन्य किसी को नहींमाना। राम के मुख से ही भरत के चरित्र की विशेषता का उल्लेख कवि ने इस प्रकार किया है -

साधु शिरोमणि शील निधाना। नहिं कोउ भूपर भरत समाना।
भरत भाव महिमा अति भारी। कहि न सकें शारद श्रुति चारी।।
दोहा- अणिमादिक सुख सम्पदा, विधि पद विभव विराग ।
लोक प्रतिष्ठा शूकरी, विष्टा समकर त्याग ।। २

चित्रकूट पहुंचने से पूर्व मार्ग में ही भरत के अन्तर्द्वन्द्व को चित्रित करते हुए कवि ने जिस सजीव तथा स्वाभाविक वातावरण की सृष्टि की है उसके परिप्रेक्ष्य में भरत का चरित्र इतना स्वाभाविक तथा मानवीय सम्वेदनाओं

१- मो सम को अघ अवगुण राशी। जेहि लगि राम भये वनवासी ।
(रघुवंश दीपक-अयोध्याकाण्ड दोहा २२६ केपूर्व की चौपाई)

२- रघुवंश दीपक अयोध्याकाण्ड दोहा २४६ तथा उससे पूर्व की चौपाइयां

से पूर्ण होगया है कि वह सहज में ही हमारी सहानुभूति का अधिकारी बन जाता है। अपने अपराध की गुरुता के कारण एक ओर जहां वह निराश होते हैं वहां दूसरी ओर वे श्रीराम के शील, स्वभाव तथा कोमल हृदय को ध्यान कर बारम्बार ढाढ़स बंधाते अपने प्रेम पर विश्वास करते हुये राम से मिलने के लिये चलते जाते हैं। अयोध्या से लेकर चित्रकूट तक भरत की यात्रा उस विषाद, आत्मग्लानि तथा ऊहापोह से भरी है जो करुणा विजलित निश्छल हृदय की सजीव झांकी प्रस्तुत कर सकने में अत्यंत सफल हो सकी है। लगता था भरत के साथ विषाद और करुणा मूर्त होकर चित्रकूट की यात्रा कररही थी। ऐसे मार्मिक स्थलों की प्रसंग सृष्टि करके कवि ने भरत के अन्तर्मन को प्रतिबिम्बित करने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है।

भरत का चरित्र रामचरित मानस में भी है - जिसके चित्रांकन में महाकवि तुलसीदास जी ने अपनी सम्पूर्ण काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। मानस की चित्रकूट सभा हिन्दी काव्य की महान् उपलब्धि है और भरत का चरित्र गोस्वामी तुलसीदास जी की उच्चतम् काव्य प्रतिभा का प्रतीक है। 'रघुवंश दीपक' का कवि मूलत: तुलसीदास जी का अनुयायी था किन्तु भरत चरित्र में उसकी मौलिक प्रतिभा कहीं भी वाधित नहीं हुई। इसप्रकार 'रघुवंश दीपक' में भरत चित्र की गरिमा 'मानस' के भरत चरित्र से किसी भी प्रकार से कम नहीं ठहरती। आत्म ग्लानि तथा भ्रातृ भक्ति के साथ साथ अन्त:करण की शुद्धि का प्रखर रूप हमें भरत के चरित्र में दिखाई देता है जो कवि की निजी जीवन की मान्यताओं तथा जीवन मूल्यों की ओर भी हमारा ध्यान खींचता है। साधु स्वभावत: शुद्ध अन्त:करण वादी होता है अस्तु 'रघुवंश दीपक' में भरत चरित्र की रचना का आधार कवि का साधु स्वभाव वाला शुद्ध अन्त:करण ही है।

भरत केवल साधु प्रकृति वाले शुद्ध अन्त:करणवादी रघुवंशी नहीं थे उनमें उतना ही बल, शौर्य तथा सामर्थ्य भी थी। यद्यपि उनके इस पक्ष का उद्घाटन केवल एक ही प्रसंग केमाध्यम से हुआ है तथापि कवि ने भरत के

चरित्र को एकांगी होने से बड़ी कुशलता ■ के साथ बचाया है। हनुमान जी संजीवनी औषधि सहित द्रोणाचल पर्वत को लिये हुये ज्योंही अयोध्यानगर के ऊपर से निकले, अपने नगर की रक्षा में सावधान तथा अत्यन्त सतर्क भरत ने उन्हें राक्षस समझ कर एक ही बाण से धराशायी कर दिया, परिचय प्राप्त होने पर कार्य की महत्ता को दृष्टि में रखकर भरत ने हनुमान को तुरन्त ही लंका की युद्ध भूमि में राम के समीप भेजने के उद्देश्य से अपने पराक्रम का परिचय देते हुये बाण पर बिठा कर भेजने की जो बात कही थी वह उनके इस पक्ष को सबलता प्रदान करती है। समग्रत: हम यह कह सकते हैं कि भरत चरित्र में साधुता तथा शौर्य का समन्वित रूप मिलता है तथा उनका श्री राम के प्रति अनन्य प्रेम चातक का स्वाती के प्रति प्रेम जैसा है। अपने इस प्रेम की अभिव्यक्ति उन्होंने स्वयं ही इसप्रकार की है -

चातक नेम प्रेम अति सांचा। स्वाति वारि बिन अमिय न पांचा।।१

३- श्री लक्ष्मण जी

' रघुवंश दीपक ' में लक्ष्मण का चरित्र भी उतना ही विस्तृत तथा व्यापक चित्रित किया गया है जितना उसके नायक श्रीराम का जन्म से लेकर अन्त तक लक्ष्मण, राम के सभी कार्यों के साक्षी तथा सहयोगी रहे हैं। निरन्तर राम के साथ रहने के कारण लक्ष्मण के चरित्र में जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात दृष्टिगत होती है वह है उनका श्रीराम के प्रति अहेतुक समर्पण। एकनिष्ठ सेवक, अनन्य भक्त, परम आज्ञाकारी अनुज तथा अत्यन्त विश्वास पात्र सखा के रूप में वे राम के सुख, दुख की प्रत्येक सम- विषम परिस्थितियों में निरन्तर साथ रहे। यद्यपि राम की ही भांति सहजराम जी ने लक्ष्मण को भी अवतार ही स्वीकार किया है किन्तु इस रूप में उनका विस्तृत वर्णन उतनी मात्रा में

१- रघुवंश दीपक - अयोध्या काण्ड दोहा २१३ के बाद की चौपाई

उपलब्ध नहीं होता जितनी मात्रा में श्रीराम का चरित्र। सहजराम जी ने लक्ष्मण को चौदह भुवन का भार धारण करने वाले शेष भगवान का अवतार माना है। १ किन्तु उनके इस रूप की अपेक्षा कवि ने उनके नर रूप को ही विशेष महत्व दिया है। विभिन्न परिस्थितियों तथा अन्यान्य घटनाओं के माध्यम से कवि ने लक्ष्मण के मानवोचित क्रिया-कलापों के उद्घाटन में ही विशेष रुचि प्रदर्शित की है। प्रकृति गत भेद होने के कारण लक्ष्मण के चरित्र में कवि ने जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिभेद का भी संकेत किया है ।

लक्ष्मण के जीवन का चरम लक्ष्य प्रभु श्रीराम की सेवा करना था । उनका अहं श्रीराम को समर्पित था। सर्वतोभावेन वे राम को ही अपना सर्वस्व मानते थे। स्वार्थ, परमार्थ तथा जीवन की चरम साधना के रूप में राम की भक्ति को ही लक्ष्मण की चरम साधना के रूप में राम की भक्ति को ही लक्ष्मण ने अपना सर्वस्व माना था। भ्रातृ-भक्ति में आत्म विसर्जन की पराकाष्ठा लक्ष्मण के चरित्र की ऐसी विशेषता है जो उन्हें अन्य पात्रों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण स्थिति प्रदान करती है। उन्होंने अपने लिये कभी कुछ नहीं चाहा जो कुछ चाहा वह श्री राम के लिये ही। राम के लिये वे धर्म, लोक मर्यादा , कुलकानि तथा जीवन में प्राप्त होने वाले उच्च से उच्च लाभ को तृणवत् त्याग कर सकते थे। पिता द्वारा दी गई वनवास की आज्ञा को यद्यपि श्रीराम ने धर्म के पालन के रूप में सहर्ष स्वीकार किया था किन्तु लक्ष्मण ने उसे राम को उन्हें प्राप्त होने वाले अधिकार से वंचित करने वाला कामी तथा विषयासक्त पिता का षड्यंत्र माना था। २ वे श्रीराम को उनके अधिकार दिलाने के लिये अपने पिता को भी बन्दी बनाकर बलपूर्वक राज्य प्राप्त करने की बात कहने में किंचित

१- रघुवंश दीपक - बालकाण्ड दोहा १३२ तथा १३३ के मध्य चौपाई -

" चौदह भुवन भार धर जो है। सूप सैन नर नारि विमोहै ।।"

२- रघुवंश दीपक अयोध्या काण्ड दोहा ६६-७० के मध्य की चौपाई -

" करिय न वचन प्रमाण पिता के। भ्रमत चित्त तेहि वस बनिता के ।"

भी नहीं हिचकते । १ इसी प्रकार ससैन्य भरत को चित्रकूट आते देखकर जो उनके मन में शंका उत्पन्न हुई थी वह भी इसी भाव को प्रदर्शित करती है। व्यक्तिगत जीवन में वे महान आत्म संयमी थे किन्तु अन्याय अहंकार तथा छल दम्भ को वे कभी सहन नहीं कर सकते थे । उनके स्वभाव में जो अत्यधिक क्रोध तथा औद्धत्य दिखाई देता है उसका मूल कारण यही है कि वे न्याय का गला घुटता हुआ नहीं देख सकते थे। अन्याय और प्रवंचना के विरोध में ही उनका क्रोध भड़क उठता था। परशुराम के अहंकार को उन्होंने ललकारा, सुग्रीव के प्रवंचक रूप से उनका क्रोध भड़क उठा। वे धीर वीर महान पराक्रमी योद्धा थे। राम के द्वारा छेड़े गये महान संघर्ष में उन्होंने अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर राम को यशस्वी तथा विजयी बनाने का संकल्प किया था। विश्वामित्र की याचना पर श्रीराम के साथ ऋषियों के यज्ञ रक्षार्थ जाने वाले लक्ष्मण ने जीवन भर आततायियों से युद्ध किया और राम की कठोर से कठोरतम् आज्ञा का पालन करते हुये अपनी जीवन लीला समाप्त की ।

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने लक्ष्मण के चरित्र में जिस उग्रता तथा क्रोध का चित्रण सर्वप्रथम अपने काव्य में किया था, उनके परवर्ती प्राय: सभी कवियों ने उनका ही अनुसरण किया है। सहजराम जी ने भी लक्ष्मण के चरित्र की इस विशेषता को प्रदर्शित किया है किन्तु उसमें मानवोचित प्रकृति के उद्घाटन का निरन्तर ध्यान रखा गया है । लक्ष्मण के चरित्र में कवि ने धर्म के व्यवहारिक रूप को उद्घाटित किया है जब कि श्रीराम तथा भरत के चरित्र में उन्होंने धर्म के सैद्धान्तिक पक्ष को प्रस्तुत किया था। वे नियतिवादी न होकर अपने पुरुषार्थ पर भरोसा करने वाले कर्मशील व्यक्ति थे। निर्वासन की अवधि उनके सदाचार मण्डित जीवन की साधनावस्था थी जिसमें उनका व्यक्तित्व अग्नि में तपे हुये कुन्दन की भांति खरा सिद्ध हुआ।

१- रघुवंश दीपक -अयोध्याकाण्ड- दोहा ६६-७० के मध्य की चौपाई -

" राखि पिता कारागृह आजू । कीजिय अवध अकण्टक राजू । "

कठोरतम सेवक धर्म के निर्वाह में लक्ष्मण चरित्र अद्वितीय है। सीता ने भले ही उनपर सन्देह व्यक्त किया हो और उन्हें दुष्ट तथा कुटिल कह कर अपमानित किया हो किन्तु लक्ष्मण के हृदय में सीता का स्थान माता के समान अत्यन्त श्रद्धास्पद था। स्वप्न में भी उन्होंने उनका कभी अपमान नहीं किया। सीता के वियोग से कातर श्रीराम के लिये लक्ष्मण अभिन्न सखा के रूप में उनकी आन्तरिक मनोव्यथा को समझने वाले एकमेव सहायक थे। स्वयं पत्नी के वियोग का दु:ख उठाकर भी उन्होंने कभी उसे प्रकट नहीं होने दिया। वस्तुत: लक्ष्मण के आत्म संयम का इससे उत्तम उदाहरण मिलना कठिन हो जायेगा।

रघुवंश दीपक में लक्ष्मण को कवि ने एक जिज्ञासु भक्त तथा उच्चकोटि के साधक के रूप में भी चित्रित किया है। ज्ञान, वैराग्य तथा भक्ति एवं मोक्षादि प्राप्त करने के लिये किन किन साधनों की आवश्यकता होती है तथा जीवन में इन सबका क्या महत्व है, जीव, ब्रह्म, माया आदि आध्यात्मि एवं दार्शनिक विचारों को राम के मुख से ही सुनने के लिये कवि ने लक्ष्मण के चरित्र में ही अवकाश ढूंढ़ा है। अस्तु एतद्विषयक विचार लक्ष्मण के चरित्र के माध्यम से ही प्रकट हुये हैं। श्रीराम की शरणागत वत्सलता तथा शरण में आये हुये जय की रक्षा करने का पूर्ण दायित्व स्वयं लक्ष्मण ने उठाया था। लक्ष्मण को शक्ति लगने के प्रसंग में परिवर्तन कर कवि ने यही प्रदर्शित किया है कि लक्ष्मण ने विभीषण के प्राणों की रक्षा के लिये ही मेघनाद के द्वारा चलाई गई शक्ति का प्रहार अपने वक्ष स्थल पर ग्रहण किया था। स्वयं श्रीराम ने भी यह स्वीकार किया था कि यदि शक्ति के आघात से लक्ष्मण की मृत्यु हो जाती है तो इस विभीषण का क्या होगा जिसे उन्होंने शरण में लेकर अभय प्रदान किया था। अपनेप्राणों की चिन्ता न करते हुये श्रीराम केप्रण की रक्षा के लिये निरन्तर प्रस्तुत रहने वाले लक्ष्मण को अन्त में श्रीराम के कोप का भाजन बनना पड़ा और वहां पर भी उन्होंने अपनी भ्रातृ भक्ति तथा एकनिष्ठ सेवक होने का पूर्ण परिचय

देते हुये राम के प्रण की रक्षा में ही अपना जीवन समर्पित कर दिया।

' रघुवंश दीपक ' में लक्ष्मण का चरित्र राजस प्रकृति का प्रतीक है जिसमें सात्विक तथा तामस प्रकृतियों का मिश्रण मिलता है। आत्म संयम चारित्र्य तथा अनन्य भावना की सात्विक प्रवृत्तियों से पूर्ण उनका व्यक्तित्व तामस प्रकृति के क्रोध, आमर्ष तथा घृणादि भावों से भी प्रभावित था। इसका कारण यह था कि यदि राम और भरत धर्म के आदर्श रूप को ग्रहण कर चलने वाले थे तो लक्ष्मण की प्रकृति अर्थ प्रधान थी। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का ही अनुसरण करते हुये सहजराम जी ने लक्ष्मण के द्वारा जो मर्यादा के विरुद्ध असम्मानपूर्ण बातें पिता के लिये कहलवाई हैं तथा भरत के प्रति जोउन्होंने क्रोध एवं घृणा प्रकट की है वह इस तथ्य की पुष्टि करती है। इसी प्रकार निर्वासन की आज्ञा को भी लक्ष्मण ने अर्थ प्रवंचना के रूप में ही ग्रहण किया था। जैसा कि हम इसी प्रसंग में परवर्ती पंक्तियों में यह कह चुके हैं कि अन्याय तथा प्रवंचना के विरोध में ही लक्ष्मण का क्रोध भड़क उठता था उसका समर्थन इन प्रसंगों में व्यक्त किये गये उद्गारों से होता है। न्यायोचित उपलब्धि में व्याघात आने पर ही लक्ष्मण विद्रोही बन जाते थे और ऐसे व्यक्ति केप्रति जो अन्याय तथा प्रवंचना का पक्ष ग्रहण करता था वे किसी भी मर्यादा, सम्मान अथवा व्यवहार को नहीं मानते थे। वस्तुत: आदि काव्य के इस मनोवैज्ञानिक धरातल को स्वीकार कर सहजराम जी ने लक्ष्मण के चरित्र को अधिक मानवोचित संवेदनशील तथा स्वाभाविक बना दिया है किन्तु साथ ही गोस्वामी तुलसीदास जी की विचार पद्धति का अनुगामी होने के कारण उनको राम के अनुशासन के सम्मुख पूर्णत: विनीत एवं आज्ञाकारी बनाकर उसे दु:शीलता तथा उद्दण्डता के दोष से भी बचा लिया है।

४- श्री सीता जी

मानसकार की ही भांति सहजराम जी ने रघुवंश दीपक में दो सीता की व्यवस्था कर उन्हें अलौकिक तथा लौकिक दो रूपों में प्रस्तुत किया है। अलौकिक रूप में `रघुवंश दीपक` की सीता परमब्रह्म की माया १, जगदम्बिका२ तथा ब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति३ की प्रतीक बन गई है जब कि उनका लौकिक रूप भारतीय नारी का प्रतीक बनकर सांस्कृतिक तथा जातीय चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। प्रथम रूप के चरित्रांकन में कवि की निजी भक्ति भावना, उपासना पद्धति तथा आध्यात्मिक विचारणाओं का प्रभाव दिखाई देता है जब कि द्वितीय रूप के चरित्रांकन में उसकी काव्य प्रतिभा तथा समकालीन युग सन्दर्भों की पृष्ठ भूमि पर भारतीय नारी के आदर्श चरित्र को उद्घाटित करने की प्रेरणा दिखाई देती है। पातिव्रत, त्याग, समर्पण, सहिष्णुता, असीम धैर्य, आत्म गौरव, सेवा आदि उच्चतम् मानवीय गुणों के समुच्चय वाला सीता का चरित्र `रघुवंश दीपक` के कवि की महान काव्य प्रतिभा का परिचय देती है।

सीता संबंधी जिन अलौकिक अवधारणाओं को महाकवि तुलसीदास जी ने अपने ग्रन्थ `रामचरित मानस` में व्यक्त किया है यद्यपि सहजराम जी ने उन्हें वैसा ही ग्रहण किया है किन्तु उसमें विस्तार न होकर संक्षिप्तता है। श्रीराम को परात्पर ब्रह्म तथा परमाराध्य स्वीकार कर लेने पर सीता को तदनुरूप ही उनकी मूल प्रकृति, माया, जगदम्बिका आदि रूपों प्रस्तुत करना कवि के लिये अनिवार्य बात हो गई थी। साथ ही रसिक भावना के राम भक्त होने केकारण उन्हें एतद्विषयक मान्यताओं के आधार पर सीता के चरित्र की सृष्टि करना भी आवश्यक था क्योंकि इसके माध्यम से

१-रघुवंश दीपक-बालकाण्ड दोहा ८३ के बाद की चौपाई

"सीता परम ब्रह्म की माया।प्रकटी करि देवन पर दाया ।।"

२- वही- लंकाकाण्ड दोहा १०१ तथा उसके बाद की चौपाई

३- वही- बालकाण्ड दोहा ३१६ तथा ३२० के मध्य की चौपाई ।

ही वे अपनी वैयक्तिक साधना की सिद्धि का मार्ग प्रशस्त कर सकते थे। 'रसिक भावना' की भक्ति का मुख्य अंग है ब्रह्म का अपनी आह्लादिनी शक्ति के साथ निरन्तर विहार करते हुये लीला रत रहना। इस लीला के मुख्य नायक श्रीराम हैं और नायिका के रूप में सीता जी उनकी आह्लादिनी शक्ति हैं जो श्री, भू, लीला १ आदि की अधिष्ठात्री हैं। इच्छा, ज्ञान, क्रिया इन तीन शक्तियों से समन्वित मूल प्रकृति के रूप में वे परमपुरुष श्रीराम की नित्य भोग्या हैं। ब्रह्म की रमणेच्छा से ही उनका आविर्भाव हुआ है तथा जीवात्मा उनके माध्यम से ही तदनुभूति प्राप्त कर परमानन्द का भागी होता है। 'सहजा सखी' २ के रूप में कवि ने इस लीला का तत् सुख भोगा था अत: सीता के इस दिव्य अथवा अलौकिक रूप का चारित्रांकन उसकी माधुर्य वृत्तियों का प्रतिफल है।

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने सीता की पतिनिष्ठा के साथ उनकी स्पष्टवादिता जन्य उग्रता का समावेश उनके चरित्र में किया है, किन्तु मानसकार ने उनमें पूर्ण समर्पण शीलता दिखलायी है।[3] कवि सहज राम ने पूर्ववर्ती इन दोनों रूपों को ग्रहण कर सीता के चरित्र को अधिक स्वाभाविक तथा संवेदनशील बना दिया है। लौकिक नारी के रूप में सीता के सम्मुख सदैव ही पातिव्रत धर्म का उच्चतम् रूप रहा है। रावण द्वारा हरण किये जाने पर उनकी सतीत्व शक्ति तथा पातिव्रत धर्म की एकनिष्ठता की परीक्षा का अवसर प्रस्तुत होता है। रघुवंश दीपक की सीता इस कठोर परीक्षा में खरी उतरती है। कवि ने विभिन्न घटनाओं तथा परिस्थितियों की संयोजना कर सीता के चरित्र के इस पक्ष को भिन्न भिन्न दृष्टिकोण से देखा है। जगद्विजयी महान् ऐश्वर्य सम्पन्न रावण के संरक्षण में रहकर

१- रघुवंश दीपक -अयोध्याकाण्ड दोहा १० के बाद की चौपाई -

'तीन शक्ति पुनि प्रगट हमारी। भू,श्री,लीला प्राणप्यारी ।।

२- एक बार प्रभु कौतुक कीन्हा।सहजा सखी रूप धरि लीन्हा ।।

(रघुवंश दीपक- बालकाण्ड- दोहा ३५५ के बाद की चौपाई ।

३- डा० जगदीश प्रसाद शर्मा - रामकाव्य की भूमिका पृष्ठ १३१ प्रथमसंस्करण

भी सीता ने स्वप्न में भी पर पुरुष की ओर आंख उठाकर नहीं देखा। मनसा, वाचा, कर्मणा वे सर्वतोभावेन राम को समर्पित थीं। कोई भी प्रलोभन उन्हें सतीत्व से डिगा नहीं सकता था। अहर्निश जागते सोते प्रत्येक स्थिति में उनका मन अनन्य भाव से अपने पति श्रीराम के चरणों में निरंतर लगा रहता था। नींद, भूख, सब का त्याग कर वे प्रत्येक क्षण राम के ही ध्यान में तल्लीन रहती थीं। सीता की इस स्थिति का वर्णन हनुमान ने श्रीराम से जितने विस्तार के साथ किया है उससे उनकी पतिनिष्ठा तथा पातिव्रत धर्म के पालन की गरिमा का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत होता है। निम्नांकित चौपाइयों का उल्लेख हमारे कथन की पुष्टि के लिये अप्रासंगिक न होगा -

पति देवता कर्म मन बानी। यक चातक यक जानकि रानी ।।
चातक आश स्वाति घन केरी। सिय हिय दरश पियास घनेरी।।
मेरे पियास जरे नित छाती। घटे न प्रीत रहे दिन राती।।
नेम प्रेम प्रण त्रिपुन पपीहा। थके दिवस निशि थके न जीहा।।
पिवे न सरित सिन्धु सर पानी। तिमि जानहु प्रभु जानकि रानी।

दोहा- नाथ तुम्हारे मिलन को, सिय हिय आशा भूरि।
जिमि चातक मुख स्वातिजल, परे यदपि बहु दूरि।। १

चातक के रूप में सीता का जीवन श्रीराम के अतिरिक्त अन्य किसी की कामना स्वप्न में भी नहीं कर सकता था। इसी प्रकार लंका में स्थित सीता के वियोग जनित दुख को श्रीराम के सम्मुख वर्णन करते हुये हनुमान ने इस प्रकार किया है -

सीता जी कर दुसह कलेशा। कहत कृपानिधि मोहि अंदेशा ।।
मैं कपि कहहुं कठोर स्वभाऊ। तुम सुनि सहि न सकहु रघुराऊ।।
कुलिशहु ते उर कठिन विशेखी। जो न द्रवहि सीता दुख देखी।।२

१-रघुवंश दीपक- सुन्दरकाण्ड दोहा ७३ तथा उसके बाद की चौपाइयां।
२-रघुवंश दीपक-सुन्दरकाण्ड दोहा ७० तथा ७१ के मध्य की चौपाइयां।

सीता के इस अकथनीय असह दुख में भी उनके सतीत्व तथा पातिव्रत धर्म के निर्वाह तथा रक्षा की चरमावस्था का ही चित्रण हुआ है।

सीता के जीवन में ऐसी दो घटनायें आती हैं जब कि उनके सतीत्व पर स्वयं उनके परमाराध्य, पति श्रीराम ने ही शंका व्यक्त की थी। ~~एक नारी के जीवन में इससे बड़ी विडम्बना क्या थी~~। एक नारी के जीवन में इससे बड़ी विडम्बना तथा अभिशाप क्या हो सकता है जब कि उस पर उसका पति ही विश्वास खो बैठे और उसके सतीत्व पर सन्देह व्यक्त कर उसे परीक्षा देने के लिये कहे। सीता ने इस विडम्बना को भी अपने असीम धैर्य तथा एकनिष्ठ पति-प्रेम की परीक्षा देकर दूर की। बिना किसी विरोध तथा हिचकिचाहट के ही उन्होंने पति की आज्ञा का पालन किया। राम ने यद्यपि लोक भीरुता तथा धर्म परायणता एवं प्रजारंजन के विशिष्ट गुणों की रक्षा के लिये अपनी प्रिया सीता पर कलंक लगाया किन्तु सीता ने कभी भी उनके चरित्र पर सन्देह नहीं व्यक्त किया और सदा उनकी रुचि का पालन किया। प्रथम अवसर ~~व~~ वह था जब श्रीराम ने रावण पर विजय प्राप्त की और सीता उनके समीप प्रस्तुत हुईं। श्रीराम ने उन्हें स्वीकार करने से पहले शंका व्यक्त करते हुये सतीत्व की परीक्षा देने के लिये आदेश दिया। पति के हृदय में उत्पन्न सन्देह को निर्मूल करने के लिये सीता ने अग्नि में प्रवेश किया और उनका व्यक्तित्व सतीत्व की पावन आभा से दीप्त हो उठा। १ दमकते हुये कुन्दन की भांति उनका सतीत्व निष्कलंक सिद्ध हुआ। श्रीराम ने उन्हें सबके सम्मुख स्वीकार किया। सीता के सतीत्व पर शंका व्यक्त करने का दूसरा अवसर उस समय प्रस्तुत हुआ जब अयोध्या की महारानी होकर भी उन्हें एक सामान्य नागरिक, एक साधारण प्रजा के हृदय में उत्पन्न होने वाली शंका का शिकार होना पड़ा। लोक भीरु, मर्यादा के रक्षक, प्रजारंजक श्रीराम ने सीता का परित्याग किया तथा वनवास का दुख भोगती हुई गर्भवती सीता ने श्रीराम की आज्ञा का पालन करते हुये अपने सतीत्व तथा एकनिष्ठ पति प्रेम का उच्चतम् उदाहरण प्रस्तुत

१- रघुवंश दीपक - लंका काण्ड - दोहा १७४ तथा १७५ के मध्य का प्रसंग

किया। डा० जगदीश प्रसाद शर्मा का यह कथन उचित ही प्रतीत होता है कि सीता का चरित्र परिस्थितियों के उत्ताप के मध्य विकसित हुआ है। १

सहजराम जी ने रघुवंश दीपक में सीता के चरित्र में पातिव्रत धर्म के उच्चतम् रूप को उद्घाटित करने के साथ साथ उन्हें एक आदर्श गृहिणी वधू, मां तथा सयुंक्त भारतीय परिवार के अन्य सबंधों का निर्वाह करने वाली आदर्श भारतीय नारी के रूप में चित्रित किया है। कर्तव्य पालन के कठोर संकल्प ने सीता के जीवन को विपत्तियों का घर बना दिया था। विमाता के वचनों से आबद्ध पिता की आज्ञा का पालन करने वाले राजकुमार श्रीराम ने जिस प्रकार पारिवारिक कलह के मूल को ही समाप्त कर दिया था उसी प्रकार सीता ने उनका अनुगमन करते हुये राज्य वैभव तथा भौतिक सुखों को तिलांजलि देते हुये जीवन भर कष्ट ही सहन किया। निर्वासन के समय सीता ने श्रीराम को भी इसीलिये कतिपय कठोर शब्द कहे २ क्योंकि उन्हें पति के सुख दुख के समान भागीदार के अधिकार से वंचित किया जा रहा था। सीता की स्पष्ट धारणा थी कि -

भरता भाग भोग कर नारी। सम्पति विपति बटावन हारी।

सहजराम जी ने मौलिक उक्तियों का सहारा लेकर सीता की वाचालता का वर्णन तो किया है किन्तु इस बाचालता में विनयजन्य शील का उज्ज्वल रूप मिलता है उसमें न तो औद्धत्य के दर्शन होते हैं और न मर्यादा का उल्लंघन ही दिखाई देता है। सीता के मुख की निम्नांकित उक्तियां हमारे कथन को भौर अधिक स्पष्ट कर सकती है -

नदी तीर तरु पति बिनु जाया।वेगि विनाश होय रघुराया।।
वनिता,लता,विदुषा जग माहीं।नाथ निराश्रय तिष्टत नाहीं।।

१- डा० जगदीश प्रसाद शर्मा-राम काव्य की भूमिका- प्रथम संस्करण पृष्ठ ६६
२- रघुवंश दीपक - अयोध्या काण्ड- दोहा ८१ तथा उससे पूर्व की चौपाइयां-
"पिता हमार पुरुष के भोरे।हमहि विवाह दीन्ह धनु तोरे ।
हम जाना सर्व मर्म विशेखा । हो तुम नारि पुरुष के लेखा ।।
निज बनिता पर पुरुष कहं,सौंपत नट भट नाहिं ।
अनुचित वचन विचारि तज, कहत न नाथ लजाहिं ।। "

रथ बिनु चक्र पुरुष गथ हीना। दिवश चन्द्र जिमि रहत मलीना।।
करण धार विनु जिमि जल याना। दीप सनेह नेहु विनु प्राना।।१

दोहा- ' पति बिनु पत्नी पाथ विनु, सफरी निपट अनाथ।
अस विचारि रघुवंश मणि, लेहु मोहि निज साथ ।।

पति के प्रति प्रगाढ़ एवं अटूट प्रेम सकंल्प का रूप विवाह के पश्चात् ही इतने उच्च स्तर पर व्यक्त होता है कि वह भारतीय नारी के दाम्पत्य जीवन का आदर्श रूप ग्रहण कर लेता है। इसके अतिरिक्त ऐसे अवसरों पर व्यक्त होने वाला उनका आत्म गौरव भी उनके चरित्र को उदात्तता प्रदान करता है।

' रघुवंश दीपक ' में सीता के हृदय में राम के प्रति जो पूर्वानुराग का चित्रण हुआ है उसमें भी सीता के चरित्र को मर्यादा से ढंका हुआ किन्तु मानवीय प्रकृति के सफल चित्रांकन से युक्त प्रस्तुत किया गया है। पुष्पवाटिका में राम के अनिंद्य सौन्दर्य को अपने नेत्रों से देखकर तन, मन, वचन से अपने आपको समर्पण करके भी सीता ने श्रीराम को प्राप्त करने की जो चेष्टायें की हैं उनमें एक नारी के कुमार हृदय की स्वाभाविकता के ही चित्र मिलते हैं ।

महाकाव्य की नायिका होने के कारण कवि ने सीता के चरित्र में व्यापकता तथा विस्तार की पर्याप्त योजना की है। आदि से लेकर अन्त तक उनकी प्रधान भूमिका होने के कारण वे सम्पूर्ण काव्य की केन्द्र विन्दु बनी रहती हैं । वस्तुत: नायक श्रीराम का सारा प्रयास सीता जी की प्राप्ति, उनके संरक्षण तथा उनसे सम्बद्ध अन्य सन्दर्भों में ही विकसित हुआ है। इसीलिये राम के समान ही सीता का चरित्र भी ' रघुवंश दीपक ' में सम्पूर्ण सम्भावनाओं के साथ उद्घाटित हो सका है।

' रघुवंश दीपक ' में सीता के चरित्र में जिस अलौकिकता तथा अति मानवीयता के तत्वों का समावेश किया गया है उसके मूल में कवि की निजी भक्ति भावना, उपासना पद्धति तथा आध्यात्मिक विचार

१- रघुवंश दीपक - अयोध्या काण्ड दोहा ८३ तथा उसकी पूर्ववर्ती चौपाइयां

ही कार्य करते हुये दिखाई देते हैं । इस तथ्य का उल्लेख हम पूर्ववर्ती पंक्तियों में कर चुके हैं । यहाँ यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि रास लीलादि वर्णन में कवि ने सीता की मर्यादा का सदैव ध्यान रखा है जिससे विहारादि के चित्रों [redacted] की मुख्य पात्र होकर भी उनके चरित्र में कहीं अश्लीलता अथवा गिरावट नहीं आई । लौकिक रूप में सीता का चरित्र सम्पूर्ण नारि जाति के लिये प्रेरणास्पद तथा अनुकरणीय बन सका है साथ ही वह महाकाव्य के एक सजीव पात्र के रूप में हमारी मानवीय सम्वेदना को अधिकाधिक परितुष्ट करने में सक्षम भी है। मानवीय प्रकृति के स्वाभाविक चित्रण से उनका चरित्र हमारे लिये अत्यन्त विश्वसनीय बन गया है। साथ ही उनका दिव्य एवं अलौकिक रूप हमारी भक्ति का मधुर आलम्बन भी बन सकता है। अपने इस दृष्टिकोण में वे महाकवि तुलसीदास जी के अधिक निकट हैं। सीता जी के चरित्र में जिस प्रकार महाकवि तुलसीदास जी ने निरन्तर मर्यादा के पालन की सतर्कता रखी है सहजराम जी ने भी उनकी मर्यादा की हर स्थल पर रक्षा की है। १ सहजराम जी की दृष्टि तथा भावना दोनों में ही सीता जी जगन्माता थी जिससे उनका मर्यादित श्रृंगार तथा गौरवास्पद रूप ही उनके लिये वन्दनीय था ।

१- रघुवंश दीपक - बालकाण्ड - दोहा ३५८ के बाद की चौपाई -

(अ) नख शिख छवि श्रृंगार नव साता ।
कहेउ न [redacted] वर्णि जानि जग माता।।

(ब) वही - दोहा २६५ के पूर्व की चौपाई -
गुरु जन लाज विलोकत अवनी ।
कर जय माल नाग गति गवनी ।।

५- हनुमान

'रघुवंश दीपक' में हनुमान का चरित्र श्रीराम के अनन्य भक्त, एकनिष्ठ सेवक तथा महान सेनानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनमें शारीरिक बल तथा मानसिक दृढ़ता एवं उत्कृष्ट बौद्धिक शक्ति का अनुपम संयोग था। प्रत्येक कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करने की अपूर्व क्षमता उनमें थी। इसीलिये वे श्रीराम के परम कृपा पात्र सेवक थे। राम काज के लिये ही उनका जन्म हुआ था। जीवन का प्रत्येक पल, प्रत्येक क्षण श्रीराम के लिये ही समर्पित था। सरलता तथा निराभिमानता उनमें इस सीमा तक थी कि अपने पौरुष अथवा पराक्रम का भान भी उन्हें नहीं रहता था। सभी कार्यों की सफलता के मूल में वे प्रभु श्रीराम की कृपा को ही मानते थे। अति विस्तृत उत्ताल तरंगों वाला जलनिधि उन्हें गोपद के समान इसलिए दिखाई पड़ा था क्योंकि उनके हृदय में प्रभु श्रीराम का प्रताप अहर्निश प्रेरणा दिया करता था। १ वे प्रभु के प्रताप से ही लंका का दहन कर सके। हनुमान के हृदय में सदा ही यह भाव रहे कि उनके द्वारा जो भी अलौकिक अथवा अति मानवीय कार्य होते हैं उन सबको स्वयं श्रीराम ही सम्पन्न करते हैं वे तो केवल निमित्त मात्र हैं। २ हनुमान की इसी भावना के कारण प्रभु श्रीराम ने उन्हें पुत्र के समान मानकर अपनी गोद में बिठाकर उनका सम्मान किया था। 'रघुवंश दीपक' की सम्पूर्ण राम कथा में हनुमान ही एक ऐसे पात्र हैं जिन्हें श्रीराम का इतना प्रगाढ़ स्नेह तथा निकटता प्राप्त हुई थी। ३ हनुमान के द्वारा किये गये सारे

१- रघुवंश दीपक- सुन्दर काण्ड- दोहा ६३ से पूर्व की चौपाई -

प्रभु प्रताप ते जलधि गम्भीरा। गोपद सम देखेउ कपि वीरा।।

२- रघुवंश दीपक - सुन्दरकाण्ड दोहा ६० (१)

प्रभु प्रताप पावक प्रबल, जारेउ कनक निकेत।

करै करावै आपु सब, सुयश और कहं देत।।

३- रघुवंश दीपक-सुन्दरकाण्ड दोहा ६६ से पूर्व की चौपाई -

आशिष दीन्ह लीन्ह शिर पाणा। लीन्ह गोद प्रिय पुत्र समाना।।

ही कार्य सेवक के रूप में एकनिष्ठ भावना से पूर्ण थे इसी लिये श्रीराम ने उनके प्रति महान् कृतज्ञता व्यक्त की थी। सीता अन्वेषण के पश्चात् जब हनुमान श्रीराम से सीता जी की विरह जन्य दीनावस्था का वर्णन करते हैं तो श्रीराम सामान्य नर की भांति विलाप कर रो पड़ते हैं और उनके मुख से सहसा निकल पड़ता है -

" अहह तात जीवत किमि सीता " ।

किन्तु दूसरे ही क्षण जब हनुमान सीता के द्वारा प्रेषित सन्देश कहने लगते हैं और उनको मुक्त करने के लिये उन्हें प्रेरित करते हैं तो श्रीराम के मुख से निकले हुये निम्नांकित शब्द हनुमान के चरित्र की महानता को प्रकट ~~करद~~ करते हैं -

दोहा - यदि सन्देश सम सुखद नहिं, शिव विरंचि पद देउं।
मैं रिनियां ते पवनसुत, धनिक पत्र लिखि देउं ।।१

वस्तुत: सीतान्वेषण में अपार जलनिधि को लांघ कर लंका पहुंचना, वहां राक्षसों से अकेले ही युद्ध करना, रावण के दरबार में अकेले ही जाकर प्रभु श्रीराम का यशोगान करना तथा लंका दहन करना, लक्ष्मण की प्राण रक्षा के लिये रात्रि भर में ही संजीवनी लेकर लौटना आदि ऐसे कार्य हैं जिनकी सफलता का श्रेय हनुमान को है किन्तु स्वयं हनुमान ने इन सब कार्यों के मूल में प्रभु श्रीराम की ही कृपा को माना है। राम के स्वरूप का ध्यान करते ही उनको जो अमानवीय पराक्रम तथा कठिन से कठिन कार्य को पूर्ण करने की शक्ति प्राप्त होती थी उसे स्वयं हनुमान ने बार बार कहा है। संजीवनी लाने के लिये प्रत्येक बानर वीर ने अपनी अपनी सामर्थ्य का परिचय दिया किन्तु ~~एक~~ किसी ने भी प्रभु श्रीराम की कृपा का सहारा नहीं लिया केवल हनुमान ने ही कहा कि -

सहजराम कपि भालु सब, कह निज निजबल भाखि।
बोले पवन कुमार तब, राम रूप उर राखि ।।

१-रघुवंश दीपक - सुन्दरकाण्ड दोहा ७५(१)

श्रीपति सत्य कहीं तुम पाही। प्रभु प्रभुता बल निजबल नाहीं । १
श्रीराम की प्रभुता केवल पर ही वे लक्ष्मण के जीवन के लिये स्वर्ग के अमृत, तथा चन्द्र को निचोड़ कर उसके अमृत को लक्ष्मण के मुख में डालने के असम्भव कार्य को भी कर सकने की इच्छा रखते थे। २ बल, बुद्धि, विक्रम तथा भक्ति भावना में हनुमान सभी बानर वीरों से श्रेष्ठ थे इसी कारण स्वयं कपि पति सुग्रीव भी उनका अत्यन्त सम्मान करते थे। हनुमान की कृपा से ही सुग्रीव के दुखों का निवारण हुआ था तथा वे किष्किन्धा के राज्य को प्राप्त कर सके थे । श्रीराम से मैत्री कराकर उन्होंने सुग्रीव को जिस महान संकट से मुक्ति दिलाई थी वह भी उनकी विलक्षण बुद्धि का ही चमत्कार था। लंका के युद्ध में रावण, मेघनाद सहित सभी राक्षस वीरों ने हनुमान के बल, पौरुष तथा युद्ध कौशल का लोहा माना था। आजन्म ब्रह्मचर्य की अतुलनीय शक्ति से मण्डित उनका संयमी जीवन प्रभु श्रीराम की कृपा से सब कुछ कर सकने में समर्थ था। संसार में ऐसा कोई भी कार्य नहीं था जो श्रीराम की आज्ञा पाकर हनुमान नहीं कर सकते थे। युद्ध में मेघनाद द्वारा प्रयोग किये गये ब्रह्मास्त्र से प्रभु श्रीराम सहित लक्ष्मण तथा अन्य सभी बानर वीर मूर्च्छित हो गये तो हनुमान ने ही सबकी रक्षा की। राम की सेना के सभी वीरों का यह विश्वास था कि यदि किसी भी प्रकार का कोई भी संकट आ पड़ेगा तो उससे केवल हनुमान जी ही उनकी रक्षा कर सकेंगे ।

'रघुवंश दीपक' में कवि सहजराम जी ने हनुमान के चरित्र में बल और बुद्धि के साथ ही वाक विदग्धता तथा वाक चातुरी का भी समावेश किया है। राम से प्रथम भेंट में ही उनकी वाक चतुरी हमारे सम्मुख उद्घाटित होती है जिसका उच्चतम रूप लंका से सीता की खोज लेकर आने पर श्रीराम से सीता की विरहावस्था का चित्रण, उनके सन्देश

१- रघुवंश दीपक लंका काण्ड- दोहा ५७(१) तथा उसके बाद की चौपाई
२- रघुवंश दीपक- लंका काण्ड-दोहा ५७(३) तथा बाद की चौपाई

तथा उनकी मुक्ति के लिये राम को प्रेरित करने के अवसर पर दिखाई देता है। इसी प्रकार रावण के दरबार में उनकी वाक विदग्धता तथा वचन चतुरी का परिचय मिलता है। लंका विजय के पश्चात् अयोध्या लौटते समय जब उन्हें राम के दूत के रूप में भरत के समीप पहुंच कर अपना परिचय तथा राम का सन्देश देना पड़ा तो उनकी वचन चातुरी स्पष्ट दिखाई देती

सहजराम जी ने हनुमान के चरित्र चित्रण में विशेष रुचि प्रदर्शित की है इसी लिये उन्होंने 'रघुवंशदीपक' में उनके चरित्र को अति विस्तार के साथ वर्णित किया है। हनुमान के जन्म की कथा तथा उनकी बाल लीला का विस्तृत वर्णन इस बात का प्रमाण है कि कवि ने हनुमान केचरित्र को पूर्ण चरित्र के रूप में ही प्रस्तुत किया है। श्रीराम के अनन्य भक्त के उच्चतम् आदर्श के रूप में ही हनुमान का चरित्र उन्होंने प्रस्तुत किया है जो उनकी अनयाश्रिनी भक्ति के अधिकारी थे। इसप्रकार हनुमान आत्म सयंम तथा निरभिमानता, एकनिष्ठ सेवक, अनन्य भक्त तथा बल,बुद्धि विक्रम से युक्त महान सेनानी थे। दुष्ट दलन तथा आततायियों के समाज विरोधी कार्यों एवं लोक मर्यादा को नष्ट करने वाले तत्वों के विरुद्ध हनुमान श्रीराम के प्रतिनिधि के रूप में निरन्तर सघंर्ष रत दिखाई देते हैं। पारिवारिक जीवन तथा अन्य दायित्वों से मुक्त रह कर भी हनुमान ने सामाजिक दायित्व के लिये अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया था। वस्तुत: हनुमान के चरित्र में हम इस विशेषता को स्पष्ट रूप से लक्ष्य कर सकते हैं।

६- दशरथ

'रघुवंश दीपक' में दशरथ का चरित्र पूर्ववर्ती राम कथाओं की अपेक्षा अधिक उदात्त तथा पूर्ण दिखाई देता है। वाल्मीकि रामायण में दशरथ को अत्यन्त भीरु १ स्त्रैण२तथा कामी ३प्रदर्शित किया गया है जब कि हिन्दी राम काव्य धारा के महत्वपूर्ण महाकाव्य 'रामचरितमानस में महाकवि तुलसीदास जी ने उन्हें वात्सल्य से कातर, सत्यव्रती, कामी किन्तु महान् पराक्रमी सम्राट के रूप में प्रस्तुत कर अपनी भक्ति से सबलित मनोवृत्ति के कारण राम का भक्त चित्रित किया है। सहजराम जी ने आदि कवि वाल्मीकि के दशरथ को चारित्रिक उदात्तता प्रदान कर उन्हें महान् पराक्रमी ,योग्य प्रशासक, राज्य में सुख, वैभव तथा शान्ति के स्थापित करने वाले सुरपति सखा के रूप में चित्रित किया है। वे सत्यव्रती दृढ़ प्रतिज्ञ ऋषि मुनि तथा विप्रों का सम्मान करने वाले धर्म परायण सम्राट थे। सहजराम जी ने दशरथ के प्रशासन का वर्णन प्रस्तुत कर दशरथ के चरित्र की विशेषताओं का उद्घाटन किया है। यहां एतद् संबंधी कवि की उक्तियों का अवलोकन करना उचित होगा -

भयउ अवधपुर दशरथ राउ।जासु राज अथ सुनियन काउ।।
पद अंगुष्ठ नख भूपर धारै । कृश तन पाप रहत मन मारै ।।
चारिउ चरण धर्म धर धरनी। बसत सुखी लखि दशरथ करनी।।
भूप भूमि दुहि सुर सन्तोषहिं।सुरपति वारि वरषि महिपोषहिं
प्रजा प्रसन्न पुन्य सब देशा। विभव विलोकि सिहांय सुरेशा।।
एक नगर सम सम्यक धरनी । पालहिं कौशलपति करि करनी।।

१-वाल्मीकि रामायण - १।२० ।२०-२१

२- वही- २।७२।१२

३- वही- २।१२।३६

एक छात्र प्रभुता जग जागी। ऋधि सिधि सदारहत सर्ग लागी ।।
नृप किरीट चरणन तर परहीं । नख शोभा मनि रंजित करहीं।।१
दोहा- देवराज सम विपुल बल, देव विटप समदानि ।
भानु समान प्रताप यश विवु बुध कहत बखानि।।

सहजरामजी ने जि गुणों तथा विशेषताओं का उल्लेख उपर्युक्त चौपाइयों में किया है वे रघु के वंश में उत्पन्न होने वाले तथा परम्परा से ही उत्तराधिकार में प्राप्त होने वाले वैयक्तिक चारित्र्य से सम्पन्न रघुवंशी सम्राट के योग्य स्वाभाविक गुण थे ।

दशरथ के चरित्र का केन्द्र बिन्दु उनका वात्सल्य तथा सत्यव्रत पालन के लिये किया गया उनका प्राणोत्सर्ग है। उनके वात्सल्य का जो उच्चतम रूप हमें सर्व प्रथम मिलता है वह है विश्वामित्र द्वारा यज्ञ रक्षार्थ राम-लक्ष्मण की याचना के अवसर का। विश्वामित्र द्वारा प्रस्तुत राम लक्ष्मण के वन गमन की याचिका से दशरथ का हृदय विदीर्ण हो उठा । राम और लक्ष्मण की लघु-वयस तथा उनकी सुकुमारता का ध्यान करते ही वे विह्वल हो उठे किन्तु स्वयं को निशाचरों से युद्ध करने के लिये प्रस्तुत करते हुय दशरथ ने रघुवंश की परम्परा का पालन किया और आये हुये याचक को विमुख न जाने देने की चिन्ता से प्रभावित उनका हृदय अपने कर्तव्य पालन के लिये कठोर से कठोर यातना के लिये तत्पर होगया । वस्तुत: इस प्रसंग में कवि ने वाल्मीकि द्वारा प्रस्तुत दशरथ के चरित्र में कायरता तथा भीरुता ब को वात्सल्य जनित मोह में परिवर्तित कर उदात्त बना दिया है। इसी प्रकार कैकेयी के वचनों से आबद्ध सत्यव्रती सम्राट दशरथ, राम के निर्वासन की कल्पना से अत्यधिक विह्वल हो उठे । राम, वन न जायें इसके लिये उन्होंने बहुत से तर्क प्रस्तुत कियेतथा उन्होंने यहां तक कह दिया कि -

मैं बनिता वश प्राण पियारे । करहु न वचन प्रमाण हमारे ।।
मैं वन दीन्ह बचन प्रति पाला। करि निग्रह मोहि हौउ भुवाला।।

भ्राता पिता पुत्र रन जीती। छलबल करिय राज यह नीती।१
वस्तुत: यह वात्सल्य जनित मोह ही है जिसने राम को पिता की आज्ञा न मानने के लिये पिता के मुख से ही राजनीति से युक्त वचन कहने के लिए प्रेरित किया। सहजराम जी ने समकालीन राजनीति के सन्दर्भ में ही दशरथ के चरित्र में इस नवीनता का समावेश किया है। आदिकवि वाल्मीकि तथा अध्यात्म रामायण की एतद्विषयक अवधारणाओं को दृष्टि पथ में रखकर यदि हम इस विषय पर विचार करते हैं तो हमें यह कहने में किंचित भी संकोच नहीं होता कि हमारे कवि ने समकालीन युग सन्दर्भ में दशरथ जैसे सम्राट के चरित्र को उद्घाटित करने का सफल प्रयास किया है।

दशरथ के चरित्र में कामुकता का प्रदर्शन महर्षि वाल्मीकि तथा गोस्वामी तुलसीदास जी ने जितने विस्तार के साथ किया है कवि ने उसे उतना ही संक्षिप्त कर दिया है। एक सम्राट अपनी सबसे अधिक प्रिय रानी की अप्रसन्नता पर यदि उसे प्रसन्न करने के लिये कुछ ऐसी चेष्टायें करता है जो सामान्य जीवन में प्रयुक्त होती है तो उसे उसकी कामुकता न मानकर पत्नी के द्वारा प्रकट किये गये मनुहार के प्रतिदान के रूप में ही लेना चाहिये। मनुहार जब हठ में परिवर्तित हो जाता है तो अनिष्ट की आशंका से राजा का हृदय घृणा से भर उठता है और वे अन्त में यह घोषणा करते हैं कि उनका अन्तिम संस्कार कैकेयी तथा उनसे जन्म लेने वाले भरत के द्वारा न हो। २ वस्तुत: यहां पर भी कवि ने दशरथ के चरित्र में उदात्तीकरण ही किया है। काम पर सत्यव्रती दशरथ की विजय प्रदर्शित की गई है।

दशरथ के चरित्र में वात्सल्य की पराकाष्ठा होते हुये भी उनकी सत्य ~~प्रवृत्ति~~ निष्ठा वात्सल्य जनित मोह तथा कातरता पर विजयी

१- रघुवंश दीपक -अयोध्या काण्ड दोहा ६३ तथा ६४ के मध्य की चौपाइयां।
२- रघुवंश दीपक-अयोध्या काण्ड- दोहा ६६ के बाद की चौपाई -
तजव प्राण बिनु राम सनेही।
पानी पिण्ड भरत जनि देही।।

होती है। राम के अत्यधिक प्रेम ने यद्यपि निर्वासन की आज्ञा देकर उनके अन्तर को मथ डाला था किन्तु अन्तत: उनका विवेक उन्हें अपने पथ से विचलित नहीं होने देता। बन जाने के लिये प्रस्तुत राम-लक्ष्मण तथा सीता जब अन्तिम विदा मांगते हैं तो दशरथ यही कहते हैं -

दोहा - अहो राम जहं लगि भये, सत्य सिन्धु जग मांहिं ।
सर्बस तजेउ प्रयास बिनु, बचन तजे नहिं जांहिं ।।
राखहु वचन बिछोह तुम्हारा। तब बिछोह पुनि मरन हमारा।।
मरन मोह पुनि पूरण लाहू । जीवत होय जन्म भरि दाहू ।।१

अपने प्राणों का उत्सर्ग करके भी दशरथ ने सत्य व्रत तथा बचन- पालन करने में ही जीवन का महान लाभ प्राप्त किया था। वात्सल्य की अतिशयता तथा लोक मर्यादा की रक्षा के महान् व्रत से दशरथ के चरित्र को प्रभावोत्पादक बनाने का प्रयास कवि की चरित्र चित्रण सबंधी उपलब्धियों का सूचक है ।

दशरथ के चरित्र में यदि कहीं भीरुता दिखाई देती है तो वह उस समय जब परशुराम जी उन्हें जनकपुर से बारात सहित आते हुये मार्ग में मिलते हैं । किन्तु यहां पर भी उनका हृदय परशुराम के निर्दय स्वभाव से उत्पन्न इस भय से विह्वल होजाता है कि कहीं बालकों का अनिष्ट न हो जाये। वस्तुत: यह भीरुता ~~क की~~ वात्सल्य जनित ~~मोह~~ ही है|क्योंकि दशरथ केमन में उत्पन्न होने वाली यह आशंका उनका स्वभाव बन चुकी थी। वृद्धावस्था में यज्ञादि के द्वारा प्राप्त किये गये पुत्रों के प्रति दशरथ का यह मोह उनकी भीरुता न होकर वात्सल्य जनित कातरता तथा विवशता थी जिसे स्वाभाविक ही कहा जायेगा ।

१- रघुवंश दीपक - अयोध्या काण्ड दोहा ८७ तथा उसके बाद की चौपाइयां।

'रघुवंश दीपक' के दशरथ के सम्मुख राम के परम ब्रह्मत्व का रहस्य केवल एक बार ही प्रकट हुआ था जब कि गुरु वशिष्ठ ने उनके मोह को दूर करने के लिये विश्वामित्र के आगमन के अवसर पर उन्हें राम के इस रूप का परिचय दिया था किन्तु यह रहस्य जानकर भी दशरथ तुरन्त ही पुन: राम की माया द्वारा प्रेरित मोह से परिपूर्ण हो गये और जीवन के अन्त तक एक पिता की ही भांति राम को अपना पुत्र मानकर व्यवहार करते रहे। वस्तुत: दशरथ का यह रूप मानव सम्वेदनाओं से पूर्ण और स्वाभाविकता के अधिक निकट है।

७- रावण

रघुवंश दीपक में सहजराम जी ने जिस सशक्त प्रतिपक्ष का विधान किया है रावण उसका मुख्य नायक तथा सम्पूर्ण संघर्ष का संचालक एवं नियामक है। विश्व विजय की महत्वाकांक्षा से पूर्ण अहंकार तथा तज्जनित युद्ध लिप्सा, रावण के चरित्र की मुख्य विशेषता है। तमोगुण उसके जीवन में मूर्त रूप होकर उसके क्रिया कलापों, व्यवहारादि में सर्वत्र छाया हुआ दिखाई देता है। उसका सारा व्यवहार समाज विरोधी तथा उसके सम्पूर्ण कार्य नैतिकता से परे इसीलिये दिखाई देते हैं क्योंकि वह तामसी वृत्तियों से पूर्णतः आक्रान्त था। विश्व विजय के उन्माद ने उसे आततायी बना दिया था। पृथ्वी उसके अत्याचार तथा धर्म विरुद्ध कार्यों से संतप्त थी। चारों ओर रावण के अत्याचारों की चर्चा थी तथा मानव ही नहीं, देव, किन्नर गन्धर्व, सूर्य, चन्द्र, तारा, गृह, नक्षत्रादि सभी उससे भयभीत एवं त्रस्त थे। मृत्यु, संत्रास, असुरक्षा, मर्यादा हीनता, अनैतिकता तथा धर्म विहीनता रावण के द्वारा पोषित राजनीति के अंग थे। वह एक कुशल राजनीतिज्ञ तथा कूटनीति का पण्डित था। अपने गुप्त चरों से उसने सम्पूर्ण भारत को नियंत्रित कर रखा था तथा स्थान स्थान पर उसकी सैनिक चौकियां स्थापित थीं जिसके नायक शूर वीर योद्धा थे। खर, दूषण, त्रिशिरा, मारीचि, सुबाहु आदि राक्षस उसकी योजनानुसार सम्पूर्ण भारत की राजनैतिक गतिविधियों से उसे परिचित तथा प्रत्येक हलचल से पूर्णतः विज्ञ रखने के लिये ही कार्य करते थे। इस प्रकार अपने आपको उसने पूर्ण सुरक्षित तथा अजेय मानकर निरंकुश शासक के रूप में मनमाने कार्य किये। अपनी नीतियों का विरोध वह सहन नहीं कर सकता था। उसके मुख से निकला हुआ वाक्य अंतिम आदेश होता था जिसका विरोध करने वाला चाहे वह कोई भी हो, दण्ड का भागी होता था। विभीषण जैसे भाई का परित्याग उसकी इसी अहमन्यता का परिणाम था। धर्म के विपरीत आचरण करने पर भी

उसका प्रतिरोध करने का साहस इसीलिये किसी में नहीं था। विश्व उसकी क्रूरता तथा प्राणिमात्र के प्रति किये गये निर्दय व्यवहार के आतंक से कांप उठता था।

रघुवंश दीपक का रावण वह अभिशप्त सम्राट था जिसे विष्णु के पार्षद के पद से च्युत होकर सनकादि ऋषियों के शाप के कारण तीन जन्मों तक राक्षस कुल में जन्म लेने के लिये विवश होना पड़ा था। विश्व विजयी सम्राट होने का वरदान उसे शाप के साथ ही प्राप्त हुआ था। अस्तु उसका अहंकार एक ऐसी प्रतिक्रिया थी जो विश्वद्रोह के लिये उसे निरन्तर प्रेरित करती रहती थी। वह यह जानता था कि उसका विनाश स्वयं हरि (विष्णु अथवा ईश्वर) के हाथों ही होना है। इसी लिये उसे काल की चिन्ता नहीं थी और न मृत्यु से भय। काल उसका सेवक तथा मृत्यु उसकी दासी थी। ऐसे अजेय एवं दुर्धर्ष आततायी के विनाश के लिये इसीलिये किसी अन्य को नहीं अपितु स्वयं ईश्वर के अवतीर्ण होने की सामूहिक प्रार्थना की गई थी जिसमें पृथ्वी सहित व देवता, यक्ष, किन्नर गन्धर्व सभी का आर्तनाद सम्मिलित था।

रघुवंश दीपक का रावण अपने शाप की बात पूर्णतः जानता था तथा उसे यह भी ज्ञान था कि श्रीराम, हरि (विष्णु) के अवतार हैं जिनके हाथों उसका उद्धार होगा। १ खरदूषण तथा त्रिशरा के विनाश के पश्चात् उसको विश्वास हो गया था कि 'हरि हमको गति देन हित, धरेउ मनुज अवतार।' २ इसी प्रकार सीता के संबंध में भी उसे पूरा ज्ञान था कि वह जगन्माता ही हैं जिनके हरण करने पर ही वह श्रीराम के करों से अपने उद्धार का मार्ग सुलभ कर सकता है। ३ जन्म से ही तामसी तथा

१- रघुवंश दीपक अरण्यकाण्ड दोहा ७८ (३)

' भयो मुदित दनुजादि पति, सुगति देहि श्रीराम।
हरि कर तीरथ त्यागि तन, जाइ जहाँ हरि धाम।।'

२- वही - दोहा ७८ (२)

३- वही - दोहा ७८ तथा ७६ के मध्य की चौपाई -

' प्रगट भई सीता जग माता। हरौ तरौं रघुपति शर धाता।।

पाप परायण होने के कारण उसका यह ज्ञान कभी कभी धूमिल हो जाता था जिसके परिणाम स्वरूप उस पर कामुकता तथा यौनावेग का अत्यधिक प्रभाव उसे सीता को अपनी भार्या अथवा भोग्या बनाने का प्रयास करने के लिये बाध्य करता था। किन्तु पुन: उस तथ्य का ध्यान आते ही वह सीता से क्षमा याचना कर अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करता है। सहजराम जी द्वारा प्रस्तुत ऐसे प्रसंगों में एक प्रसंग का उदाहरण देकर अपने कथन की पुष्टि करना अप्रासंगिक न होगा। किसी भी प्रकार के प्रलोभन मृत्यु के भय तथा अन्य आकर्षणों से भी जब सीता ने रावण की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा और अपने सतीत्व पर अडिग रहीं तो रावण ने छल से उन्हें अपनाने का प्रयास किया। माया द्वारा अपने आपको श्रीराम के वेश में प्रस्तुत कर जब वह सीता से मिलने के लिये जाता है तो आकाश-वाणी द्वारा उसके मायावी रूप का परिचय मिलते ही सीताजी मुख ढंक कर उससे विमुख हो जाती हैं। रावण नपुंसक हो जाता है और सीता सबंधी उसका ज्ञान उदय होते ही वह उनकी स्तुति करने लगता है जिसमें स्पष्टत: वह अपने अपराध की क्षमा मांगता हुआ श्रीराम के कर रूपी तीर्थ से अपने उद्धार की याचना करता है। रघुवंश दीपक का यह प्रसंग निम्नांकित है -

छन्द -

पापी दशानन जानकी, जगदम्बिका जिय जानेउ ।
शिरनाय कीन्ह प्रणाम, द्वौ कर जोरि अस्तुति ठानेउ।
जै राम सखा राम जाया राम की छाया क्षमा ।
तब अंश सम्भव शारदा,शशि मौलि की रमणी रमा ।
पति देवता वनिता शिरोमणि मातु मैं तोहि चीन्हेउ।
हे जानकी जगदम्बिका, मो पर अनुग्रह कीजिये ।
रघुवीर कर तीरथ तजौं,तनु मातु यह वर दीजिये।।१

१- रघुवंश दीपक - लंका काण्ड दोहा ११६ से पूर्व का छन्द

अभिशप्त विष्णु के पार्षद के रूप में अवतरित होने वाला रावण राक्षसी प्रवृत्तियों का प्रतीक था। जिसमें काम+ क्रोध,मोहादि दुर्गुणों का समुच्चय था। जीव द्रोही तथा लोक मर्यादा का विध्वंशक, धर्म विरोधी, रावण राम को ईश्वर का रूप जानकर भी उनसे भयभीत नहीं था। उसका अहंकार उसे सदैव ही राम के विरोध में खड़ा रहने के लिये बाध्य कर देता था और उसका समस्त ज्ञान नष्ट हो जाता था। सीता हरण के पश्चात् उसके सम्पूर्ण प्रयास उसके अहंकार जनित अज्ञान से ही प्रेरित हैं। युद्ध में प्रमुख योद्धाओं का विनाश, मेघनाद जैसे महान् योद्धा के संहार तथा कुम्भकरण सहित उसके अन्य प्रमुख सेनापतियों के नष्ट हो जाने पर भी उसने युद्ध से मुख नहीं मोड़ा,जोउसकी दृढ़ इच्छा शक्ति तथा अहंकार जनित हठ का ~~ही परिणाम~~ द्योतक है। लंका दहन की भीषण विभीषिका से त्रस्त लंका निवासी उसके विरोधी होगये थे, उसे गाली देने लगे थे, यही नहीं मन्दोदरी सहित उसके परिवार की नारियां भी उसे कोसने लगीं थी १ किन्तु रावण ने इन सबसे अप्रभावित रह कर अपने अहंकार को झुकने नहीं दिया।

अहंकार, दम्भ तथा काम की प्रबलता होते हुये भी रावण में वात्सल्यजनित सहृदयता भी थी। मेघनाद वध के पश्चात् किया गया उसका विलाप उसके वात्सल्य से पूर्ण हृदय का स्पष्ट उदाहरण है। २ पुत्र वधू के विलाप से उसका कठोर हृदय भी विचलित हो उठा। ३ पुत्र शोक के आवेग में रावण इतना उत्तेजित हो उठा था कि वह सीता को मारने के लिये भी दौड़पड़ा। ४ रावण के चरित्र में वात्सल्य जनित करुणा तथा

१- रघुवंश दीपक - सुन्दर काण्ड- दोहा ५५ तथा ५६ के मध्य की चौपाइयां।
२- रघुवंश दीपक -लंका काण्ड दोहा ६४(२) तथा ६५ के मध्य की चौपाइयां।
३- वही-लंका काण्ड-दोहा ६६ केपूर्व की चौपाई -
पुत्र वधू कर रोदन नादू। सुनि दशमुख मन जनित विषादू।।
पुत्र शोध उपजा उर दाहू। बहेउ विलोचन वारि प्रवाहू।।
४- वही -लंकाय काण्ड- दोहा ६५ तथा ६६ के मध्य की चौपाइयां।

जिससे वह
कोमलता उसे मानवीय सम्वेदनाओं से पूर्ण बना देती है ~~जिससे~~ हमारी सहानुभूति ~~तथा दया~~ का पात्र बन जाता है।

कूटनीतिक कौशल्य तथा भेद नीति की निपुणता रावण के चरित्र में उस समय दिखाई देती है जब श्रीराम का संदेश लेकर जाने वाले रामदूत अंगद को वह अपने पक्ष में करने के लिये बालि-वध का स्मरण दिलाता हुआ उसके प्रतिशोध को जागृत करना चाहता है। १ शत्रु के विनाश के लिये उसके ही विश्वास पात्र सेनापतियों तथा प्रमुख योद्धाओं के मन में भेद उत्पन्न कर उनके द्वारा ही विद्रोह खड़ा करने की नीति युद्धकाल में उस दूरदर्शिता का प्रतीक मानी गई है जिसे सफलतापूर्वक अपना कर प्रबल से प्रबल शत्रु को पराजित किया जा सकता है। रावण ने भी यही प्रयास किया था क्योंकि उसका भाई पहले ही उसे छोड़कर शत्रु से मिल गया था। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि रावण के चरित्र में अहंकार तथा काम की प्रधानता होते हुये भी उसमें वात्सल्य जनित कोमलता भी थी। वह एक महत्वाकांक्षी कुशल कूटनीतिज्ञ महान धीर वीर सम्राट था यद्यपि उसके कार्य लोकहित विरोधी तथा जन जीवन को त्रस्त करने वाले थे। धार्मिक मान्यताओं का विरोधी निरंकुश व शासक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने की अहर्निश चिन्ता करने वाला विषयी सम्राट था।

:चरित्र चित्रण में कवि की उपलब्धि:

पूर्ववर्ती पृष्ठों में काव्य में चरित्र चित्रण सबंधी जिन आवश्यक तत्वों तथा विद्वानों की मान्यताओं का उल्लेख किया जा चुका है उन्हें दृष्टि पथ में रखकर जब हम 'रघुवंश दीपक' के कवि की एतद्विषयक उपलब्धियों पर विचार करते हैं तो हमें यह कहने में किंचित भी हिचकिचाहट

१- रघुवंश दीपक- लंका काण्ड - दोहा २६ तथा २८ के मध्य की चौपाइयां।

नहीं होती कि हमारा चर्चित कवि इस क्षेत्र में पूर्ण सफल रहा है। प्रख्यात कथावस्तु को स्वीकार करके भी सहजराम जी ने पात्रों के माध्यम से समकालीन मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक चित्रों की सफल अभिव्यक्ति की है। सांस्कृतिक तथा सामाजिक चेतना को उसने पात्रों के स्वाभाविक चरित्र विकास के माध्यम से प्रस्तुत किया है इसलिये रघुवंश दीपक के पात्र प्राचीन कथावस्तु से संबंधित होते हुये भी नवीनता लिये हुये हैं। रघुवंश दीपक के पात्रों की रचना में कवि की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि वे अपने मानवोचित स्वाभाविकता तथा क्रिया कलापों की जीवन्त अभिव्यक्ति के कारण हमारी सहानुभूति, स्नेह, श्रद्धा तथा घृणा को उभार कर हमारी चेतना में गहरे प्रविष्ट होने में सक्षम सिद्ध होते हैं। कवि ने पात्रों के चरित्र के माध्यम से मनोविकारों के भिन्न भिन्न प्रकृतिस्थ स्वरूप को व्यक्ति या समुदाय विशेष के लक्षणों को प्रकट करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। इसके लिये सहजराम जी ने आवश्यक प्रसंग-सृष्टि खड़ी करके तथा घटनाओं के यथोचित समायोजन के द्वारा पात्र के जीवन-व्यवहार को उद्घाटित किया है।

२- अपने सर्वांग पूर्ण आदर्श की प्रतिष्ठा के उद्देश्य की सफलता के लिये कवि ने जिन आदर्श चरित्रों की सृष्टि की है वे अपनी चारित्रिक गरिमा तथा मानवोचित स्वाभाविकता के कारण हमारे आदर्शों, भावोर्मियों आदि को चरितार्थ कर शुद्ध अभिव्यक्ति का सुख प्रदान करते हैं तथा हमारे लिये अनुकरणीय बन कर हमारी चेतना को उद्बुद्ध करते हैं। राम, सीता, भरत, लक्ष्मण तथा हनुमान जैसे चरित्र किसी भी समाज के गौरव बिन्दु बन सकते हैं।

३- हिन्दी राम काव्य धारा में राम का चरित्र प्रायः अति मानवीय तथा अलौकिकता से पूर्ण चित्रित किया गया है। किन्तु सहजराम जी ने उसमें समन्वय स्थापित कर उसे अधिक विश्वसनीय तथा स्वाभाविक बना दिया है। रघुवंश दीपक में राम, ईश्वर तथा नारायण के रूप में अति मानवीय एवं अलौकिक गुणोंयुक्त होकर भी मानवोचित

स्वाभाविकता तथा लौकिक व्यवहारादि में नर रूप में ही आदर्श चरित्र से सम्पन्न चित्रित किये गये हैं । इस क्षेत्र में कवि की उपलब्धि अप्रतिम है।

४- दैवी तथा आसुरी विचार धाराओं के चिर कालीन संघर्ष को कवि ने राम तथा रावण के सशक्त पक्षों का चरित्रांकन कर उसे अधिक प्रभावी एवं व्यापक बना दिया है। सशक्त प्रतिपक्ष के विधान में उसकी सफलता हमारी जातीय भावना तथा सांस्कृतिक चेतना कोअधिक सजग कर सकी है ।

५- रघुवंश दीपक केमात्र मानवीय संबंधों के मधुर तथा कडुये,उज्ज्वल एवं कलुषित सभी पक्षों के उद्घाटन में पूर्णतः सफल हुये हैं।दाम्पत्य जीवन के मधुर तथा कडुये एवं विमातादि के भाव प्रकाशन, शत्रु, मित्र तथा बन्धु द्वारा प्रदर्शित भावों के उद्घाटन में सहजराम जी पूर्णतः सफल हुये हैं । इन संबंधो के निर्वाह में कवि नेपात्रों की आदर्श मूलक दृढ़ संकल्प - शक्ति का चित्रण करके भी उन्हें यथार्थ के दृढ़ धरातल पर ही स्थिर रखा है ।

'रघुवंश दीपक' में चरित्र चित्रण संबंधी नवीनता

रघुवंश दीपक में चरित्र चित्रण संबंधी जिन नवीन उद्भावनाओं के दर्शन होते हैं उनमें कवि की कतिपय चरित्रों की सर्वथा नवीन योजना तथा परम्परा से प्राप्त कतिपय प्रख्यात पात्रों में चारित्रिक उदात्तता प्रदान करने की नवीनता मुख्य रूप से लक्ष्य की जा सकती है। जिन पात्रों की योजना कवि ने सर्वथा नवीन रूप में की है उनमें, विश्वावसु गंधर्व, सीता की कतिपय सखियां है । विश्वावसु गंधर्व को प्रसंग वश राम के निर्वासन के एक कारण के रूप मेंप्रस्तुत किया गया है जिसे इन्द्र ने कैकेयी से बदला लेने का माध्यम बनाया था। सीता की जिन सखियों का उल्लेख 'रघुवंश दीपक' मेंमिलता है उनमें चन्द्रकला,विमला, सहजा सखियां प्रमुख हैं। इन सखियोंकी कल्पना कवि ने अपनी माधुर्य उपासना की परितुष्टि केलिये किया है क्योंकि कवि

रसिक भावना की राम भक्ति का उपासक था जिसमें राम-सीता के विहारादि में इन सखियों का होना अनिवार्य माना गया है। प्रख्यात पात्रों में चारित्रिक उदात्तता की योजना में कवि ने दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा, शत्रुघ्न जैसे पात्रों को चुना है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि रघुवंश दीपक में श्रीराम के उत्तराधिकारियों के भी चरित्र संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किये गये हैं जिनमें लव, कुश, तथा अतिथि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं किन्तु इन पात्रों के चरित्र ' रघुवंश ' तथा रामचन्द्रिका के आधार पर ही है अत: इनमें किसी नवीनता के दर्शन नहीं होते।

दशरथ का चरित्र जिस रूप में आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने प्रस्तुत किया है उसमें वे भीरु तथा वचन के पालन न करने वाले कूटनीति परायण व्यक्ति के रूप में दिखाई देते हैं। विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण की याचना पर पहले तो उनमें वात्सल्य की प्रधानता के दर्शन होते हैं किन्तु बाद में रावण का नाम सुनते ही उनकी भीरुता प्रकट हो जाती है और वे विश्वामित्र से अपने तथा अपने पुत्रों पर कृपा करने की याचना करते हैं।[1]

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में दशरथ की इस दुर्बलता का उल्लेख नहीं किया किन्तु उनमें स्त्रैण, तथा कामुकता का समावेश कर उन्हें स्त्री केवश में विवश दिखाया है। सहजराम जी ने महर्षि वाल्मीकि के इस पक्ष को कि दशरथ रावण का नाम सुनकर भयभीत हो गये थे नहीं स्वीकार किया बल्कि उनमे मुख से यह कहलवाया है कि -

कहँ मारीचि निशाचर घोरा। कहँ बालक लघु वयस किशोरा ।।
तातै मुनि मैं सैन समेता। चलहुं साथ सुत रहहिं निकेता ।।
जद्यपि जरए, निशाचर मारी, करि हौं मुनि मख की रखवारी ।।[2]

कवि ने इस कथन के द्वारा दशरथ में वात्सल्य जनित मोह की प्रधानता को विशेष महत्त्व देकर उनकी भीरुता को साहस तथा पराक्रम में परिवर्तित कर दिया है। इसी प्रकार उन्हें सत्यव्रती दिखाकर, कैकेयी के प्रति घृणा प्रदर्शित कर स्त्रैण तथा कामुकता के पंक से भी निकाल दिया है।

१- वाल्मीकि रामायण - १।२०।२०-२१
२- रघुवंश दीपक बालकाण्ड दोहा १७६ तथा १७७ केबाद की चौपाइयां।

कौशल्या के चरित्र में कवि ने वात्सल्य तथा वीर पत्नी एवम् वीर माता के गुणों की सृष्टि कर उन्हें चारित्रिक दृष्टि से गरिमा प्रदान की है। वाल्मीकि रामायण में उन्हें सौति के द्वारा दियेगये कष्टों तथा पति के द्वारा उपेक्षित असहाय रानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है जब कि ' रामचरित मानस ' में उनका वात्सल्य तथा कर्तव्य निष्ठ महारानी के रूप में चित्रण हुआ है। सहजराम जी ने इन रूपों में उनके वीर पत्नी तथा वीर माता होने की कल्पना कर उसे और अधिक उदात्त बना दिया है। विश्वामित्र के साथ यज्ञ रक्षार्थ जाने वाले राम -लक्ष्मण दोनों राजकुमारों को विदा करते समय का प्रसंग इस सन्दर्भ में अपनी नवीनता लिये हुये हैं। १ जहाँ क्षात्रिय धर्म का उपदेश देने वाली एक वीर पत्नी अपने पुत्रों को एक वीर माता के रूप में विदा करती है।

सुमित्रा :

सुमित्रा का चरित्र हिन्दी राम काव्य धारा में कहीं भी विस्तार से नहीं मिलता और न उसके उदात्त चरित्र पर ही कहीं प्रकाश डाला गया है। किन्तु सहजराम जी ने इसे विशेष रूप से लक्ष्य कर उसके चरित्र को प्रस्तुत किया है। वह एक वीर पत्नी तथा वीर माता के रूप में हमारे सम्मुख आती है। लक्ष्मण के राम के साथ वन गमन तथा बाद में मेघनाद द्वारा चलाई गई शक्ति से उनके आहत होने का समाचार , संजीवनी लाने के लिये गये हुये हनूमान के मुख से सुनकर कवि ने सुमित्रा के मुख से जो कुछ कहलवाया है वह उसकी चारित्रिक उदात्तता को प्रकट करने के लिये ही था। वे कहती हैं-

---

१- रघुवंश दीपक- बालकाण्ड दोहा १८१ तथा १८३ के मध्य की चौपाइयां-

परै न समर भूमि पद पीछे। देखि भयंकर शापक तीछे ।।
क्षात्री तनुधरि समर सकाहीं। लोक अयश परलोक नशाही ।।
क्षात्रिन को तीरथ सुख दायक। सम्मुख समर सकाहिं न घायक।।

दोहा - तात तुम्हारे मरण कर स्वप्ने शोक न होइ ।
राम अकेले समर महं, संग सहाय न कोई ।।
रिपु सूदन कहं राखि निकेता ।
जाहु भरत तुम सैन समेता ।। १

जिस प्रकार राम काव्य धारा में सुमित्रा का चरित्र अत्यन्त संक्षिप्त मिलता है उसी प्रकार शत्रुघ्न का चरित्र भी प्राय: कवियों की उपेक्षा की वस्तु रही है। किन्तु सहजराम जी ने इसे भी विस्तार प्रदान कर चारित्रिक विशेषताओं के उद्घाटन के लिये नई प्रसंग सृष्टि खड़ी की है। रामराज्याभिषेक के पश्चात् लवणासुर के अत्याचारों की कहानी जब अयोध्या तक पहुंची तो इसके संहार का दायित्व शत्रुघ्न को सौंपा गया। शिव भक्त लवणासुर भी बड़ा ही दुर्जेय था। किन्तु शत्रुघ्न के पराक्रम, साहस तथा युद्ध कौशल के सम्मुख वह नहीं ठहर सका। वस्तुत: कवि के द्वारा समायोजित यह प्रसंग शत्रुघ्न की चारित्रिक गरिमा को उद्घाटित करने के उद्देश्य से ही ग्रहण किया गया है।

: निष्कर्ष :

चरित्र चित्रण सम्बन्धी इस विस्तृत विवेचन को दृष्टि पथ में रखकर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि चरित्र सृष्टि के दृष्टिकोण से सहजराम ने महर्षि वाल्मीकि तथा गोस्वामी तुलसीदास जी का अनुसरण किया है किन्तु कतिपय चरित्रों में उसने अपने पूर्ववर्ती इन दोनों ही महाकवियों के दृष्टिकोण का समन्वित रूप भी स्वीकार किया है। चरित्र चित्रण संबंधी महर्षि वाल्मीकि का मानवीय दृष्टिकोण तथा महाकवि तुलसीदास जी का भक्ति परक आदर्श युक्त अति मानवीय एवम् अलौकिक चरित्र से युक्त कतिपय प्रमुख पात्रों के चित्रण का दृष्टिकोण ग्रहण कर कवि

१- रघुवंश दीपक- लंका काण्ड - दोहा ६३ तथा उसके बाद की चौपाई

ने समन्वय का प्रयास किया है। यद्यपि रामचरित मानस की ही भाँति ` रघुवंश दीपक ` के सभी पात्रों को राम भक्त सिद्ध करने का प्रयास भी किया गया है ।

२- रघुवंश दीपक में चरित्र चित्रण संबंधी सभी प्रचलित मान्यताओं के आधार पर पात्रों के चरित्र प्रस्तुत किये गये हैं । जिसके मूल में कवि की व्यापक काव्य प्रतिभा तथा महाकाव्योचित सामर्थ्य के दर्शन होते हैं।

३- सहज राम जी ने कतिपय चारित्रिक नवीनताओं की उद्भावना से हिन्दी राम काव्य धारा में नवीन सम्भावनाओं के द्वार उद्घाटित किये।

समग्रत: कवि सहजराम जी `रघुवंश दीपक ` के पात्रों के चरित्र चित्रण में पूर्णत: सफल रहे हैं , यह कहने में संकोच नहीं होता ।